प्रकाशक
मंत्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ
राजघाट, काशी

●

पहली बार ५
मार्च १९६१
मूल्य : साठ नये पैसे

●

मुद्रक
विश्वनाथ भार्गव
मनोहर प्रेस, जतनबर, वाराणसी

प्रकाशकीय

इन्दौर में पूज्य विनोबाजी ने और अनेक बातों के साथ-साथ अशोभनीय पोस्टर के खिलाफ भी आवाज उठायी। इन्दौर से ही इस अभियान की शुरुआत हुई। आज चारों ओर मातृ शक्ति की अवहेलना और दुरुपयोग हो रहा है। क्या सिनेमा और क्या उद्योग-व्यवसाय, सब तरफ स्त्री को प्रदर्शन और भोग-विलास का माध्यम बनाया जा रहा है। इसे बरदाश्त करना असह्य होना चाहिए। यह एक महान् पाप या अपराध है। पूज्य विनोबाजी ने समस्त विश्व के नर-नारियों को इस दिशा में उचित बल और विवेक का परिचय देने का आवाहन किया है।

प्रस्तुत पुस्तिका में विनोबाजी के भाषणों के साथ मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल की ओर से इन्दौर में किये गये सत्याग्रह की जानकारी पत्र-व्यवहार और नागरिकों तथा पत्रकारों के अभिप्राय भी दिये गये हैं।

आशा है, यह पुस्तिका जन-जन में नैतिक जिम्मेवारी और मातृ शक्ति की वन्दना के भाव जाग्रत करने में मददगार होगी।

●

इन्दौर में अशोभनीय पोस्टर हटाने का प्रकरण

इन्दौर में अशोभनीय पोस्टर का अग्नि-समर्पण !

अनुक्रम

●

शब्दरूप स्मृति

जिन आकर्षणों के कारण हमने इंदौर शहर चुना, उनमें एक बहुत बड़ा आकर्षण देवी अहिल्याबाई का नाम और उनकी स्मृति का था। आज उनकी पावन स्मृति में कुछ कहने का मौका मिल रहा है। इससे मुझे बहुत खुशी हो रही है। ये स्मृतियाँ किस तरह असर डालती हैं, इसका कोई सुव्यवस्थित वर्णन नहीं किया जा सकेगा, लेकिन उन स्मृतियों का मनुष्य के चित्त पर बहुत गहरा असर रहता है, यह दुनिया का अनुभव है और मेरा अपना विशेष अनुभव है। मैं इन स्मृतियों में इतना तन्मय हो जाता हूँ कि उनसे मैं अपने को अलग नहीं कर पाता हूँ, स्वचित्त को भूल जाता हूँ। जब कभी महापुरुषों के स्मरण का प्रसंग आता है, तब मैं अपने शरीर से उठकर मानो उनके शरीर में ही दाखिल हो जाता हूँ। 'चित्तस्य परशरीरप्रवेशः'—चित्त परशरीर में आविष्ट होता है, इसकी एक प्रक्रिया योगशास्त्र में बतायी गयी है। वह प्रक्रिया तो मैं नहीं करता हूँ, लेकिन फिर भी प्रवेश होता है। इन महापुरुषों के हृदय में जो प्रवेश होता है, वह शब्द द्वारा हो जाता है। अक्सर मानव कुछ चित्र खड़े करता है, मंदिर, मूर्तियाँ आदि बनायी जाती हैं, उन सबका कुछ-न-कुछ असर तो होता ही है, लेकिन जो शब्दरूप स्मृति होती है, उसका असर सबसे ज्यादा होता है।

अगर यहाँ उठ खड़ी न होती !

इंदौर में मैं इस आशा से आया था कि यहाँ की स्त्री-शक्ति

जगे। स्त्री-शक्ति जगाने के लिए यहाँ बलवत इंजन लगा है। देवी अहिल्याबाई का स्मरण तो इंदौर के साथ जुड़ा ही है और अब कस्तूरबा ट्रस्टवालों ने यहीं पर कस्तूरबाग्राम बसाया है तो कस्तूरबा का स्मरण भी इंदौर के साथ जुड़ गया है। तो इस बलवत इंजन के बल पर भी क्या यहाँ की बहनें नहीं जागेंगी और सर्वोदय-नगर बनाने में अपना पूरा हिस्सा नहीं देंगी? मैं मानता हूँ कि यह नामुमकिन है। यहाँ की बहनों से मैं बहुत आशा करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि सारे भारत की स्त्रियों को शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा का काम करना चाहिए। इस समय भारत में चरित्रभ्रंश का कितना आयोजन हो रहा है। उसका विरोध और प्रतिकार अगर बहनें नहीं करेंगी तो फिर परमेश्वर ही भारत को बचाये, ऐसा कहने की नौबत आयेगी।

क्या चरित्र-भ्रंश देखते ही रहेंगे!

शहरों की जो दशा है, वह अत्यन्त खतरनाक है। पढ़ी-लिखी लड़कियाँ शहर के रास्तों पर चलती हैं, तो लड़के उनके पीछे लगते हैं यह क्या बात है? यह जो शील-भ्रंश हो रहा है, जिसमें गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठा ही गिर रही है, उसका विरोध करने के लिए बहनों को सामने आना चाहिए। माताओं को समझना चाहिए कि अगर देश का आधार शील पर नहीं रहा, तो देश टिक नहीं सकता। शिवाजी महाराज की सुप्रसिद्ध कहानी है। उनके एक सरदार ने चढ़ाई जीती और एक यवन-स्त्री को वे शिवाजी महाराज के पास ले आये। शिवाजी महाराज ने उनकी तरफ देखकर कहा : "हे माँ! अगर मेरी माता तेरे जैसी सुन्दर होती, तो मैं भी सुन्दर होता।" ऐसा कहकर उन्होंने उसे आदरपूर्वक बिदा किया। ऐसी संस्कृति जिस देश में चली, उस देश में इतना चारित्र्य-भ्रंश हो और सारे लोग देखते रहें, यह कैसे हो सकता है!

हम कहाँ जा रहे हैं ?

मैं इंदौर आकर इतना दुःखी हुआ कि उसका वर्णन नहीं कर सकता। यहाँ पर दीवारों पर इतने भद्दे चित्र देखे कि जिनके स्मरण से आँखों में आँसू आ जाते हैं। माता-पिता इन चित्रों को कैसे सहन करते हैं? इससे पहले नौ साल तक मुझे किसी शहर में घूमने का मौका नहीं मिला, इसलिए शहर की हालत को मैं जानता नहीं था। लेकिन यहाँ जो मैंने देखा, उससे मेरा हृदय बहुत ही व्याकुल हुआ। तब से मेरे ध्यान में आया कि शील-रक्षा की मुहिम होनी चाहिए और स्त्रियों का शांति-रक्षा और शील-रक्षा का दुहरा काम करना होगा। उसके बिना संस्कृति नहीं टिकेगी। मनु महाराज ने स्मृति में स्त्रियों के लिए कितना आदर व्यक्त किया है 'उपाध्यायान् दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता। सहस्रं तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते।'—दस उपाध्याय के बराबर एक आचार्य होता है। क्योंकि उपाध्याय ऐसे ही मंत्र पढ़ाते हैं अर्थ नहीं जानते हैं। आचार्य अर्थ जानते हैं। सौ आचार्यों के बराबर एक पिता होता है और हजार पिताओं से भी एक माता का गौरव बड़ा है। इतना महान् शब्द जिस भूमि में प्रयुक्त हुआ वहाँ की संस्कृति में स्त्रियों के लिए इतना आदर था, वहाँ पर ऐसे गंदे चित्र खुलेआम दिखाये जायँ और लड़कों के दिमाग इतने विषय-वासना से भरे हुए हों कि कन्याओं के पीछे लगने में ही उन्हें पुरुषार्थ मालूम होता हो यह कितनी शोचनीय और लज्जा-जनक बात है। आप जरा सोचिये कि हम कहाँ जा रहे हैं?

मातृत्व पर प्रहार

हमें इस हालत को रोकना होगा। आपकी पचास राजनैतिक पार्टियाँ आज क्या कर रही हैं? परन्तु किसीको यह सूझता नहीं है कि शील-रक्षा हो। जिस भारत में स्त्रियों के लिए इतना आदर

है कि वेद में कहा है — "स्त्री अधिक सूक्ष्म बुद्धिवाली होती है, पुरुषों से उदार होती है, क्योंकि पुरुष परमेश्वर की आराधना, भक्ति, मातृत्व में कम पाता है। स्त्री माता होती है वह पुरुष का दुःख जानती है। किसीको प्यास लगती है तो वह जानती है। किसीको पीड़ा होती है तो जानती है और अपना मन हमेशा भगवान की भक्ति में लगा रखती है।' वेद का हमारे यहाँ मातृ-स्थान कहा है। ज्ञानदेव ने लिखा है 'माईं श्रुति परश्रुति माउली।' श्रुति के जैसी माता नहीं है। जो दुनिया को अहित से बचाती है और हित में प्रवृत्त करती है, इस तरह श्रुति को माता की उपमा दी गयी है। इस मातृत्व पर आज इतना प्रहार होता है और हम सब खुलेआम उसे सहन कर रहे हैं। मैं नहीं मानता कि इससे प्रगति की राह खुली होगी। आपकी पचासों पंचवार्षिक योजनाएँ चलती हों तो भी कोई काम नहीं होगा। केवल भौतिक उन्नति से देश ऊँचा नहीं उठता। जब शील ऊँचा उठता है, तब देश उन्नति करता है।

बहनें प्रतिज्ञा करें

आज देवी अहिल्याबाई के पुण्य स्मरण में यहाँ की तमाम माताएँ और बहनें प्रतिज्ञा करें कि शांति और शील-रक्षा के लिए हम प्रयत्नशील रहेंगी। पुरुषगण माताओं की इस प्रतिज्ञा में मदद करें जिससे कि भारत में फिर से धर्म का उत्थान हो।

धर्म-संस्थापना

अभी तक धर्म बना ही नहीं था, केवल कल्पनाएँ ही बनी थीं। ऐसा धर्म नहीं बना था जिसके विरोध में जाने की किसीकी इच्छा ही न हो। मकान बनानेवाला राष्ट्र पंक्ति में ही बनाता है। वह हिम्मत ही नहीं करता कि दूसरे किसी पंक्ति में मकान बनाकर

जाय। लेकिन पहले कई प्रयोग हुए होंगे—दूसरे एंगिल में मकान बने होंगे और वे नहीं टिके होंगे। तभी यह सिद्धान्त बना होगा कि राइट एंगिल में ही मकान बनाना चाहिए। तभी उस पर सबकी श्रद्धा जमी। इस तरह स्पष्ट है कि आज न सत्य-निष्ठा मान्य है, न अहिंसा-निष्ठा। लोग कहते हैं कि अमुक मौके पर सत्य ठीक है और अमुक मौके पर बेठीक। हमेशा सत्य ठीक ही है, ऐसा नहीं कहा जाता। जैसे मकान राइट एंगिल में ही बनाना चाहिए यह माना जाता है, वैसे ही निरपवाद हर परिस्थिति में सत्य पर चलने में फायदा ही होनेवाला है और सत्य पर न चले तो नुकसान ही होने वाला है—ऐसा न व्यक्तिगत क्षेत्र में माना गया है और न सामाजिक या राजनैतिक क्षेत्र में। सभी क्षेत्रों में अहिंसा के लिए ऐसा निःशंक विश्वास पैदा होना अभी बाकी है। इसीका मतलब है कि धर्म-संस्थापना होना अभी बाकी है। आज तक जो तरह-तरह के धर्म बने वे धर्म नहीं, श्रद्धाएँ थीं। कहा जाता है कि बहुत करके सत्य, अहिंसा लाभदायी हैं, लेकिन वे अवश्य ही लाभदायी हैं और उस पर नहीं चलेंगे तो अवश्य हानि होगी, ऐसी निष्ठा और विश्वास मानव के हृदय में अभी तक प्रतिष्ठित नहीं हुआ है। सब ही हिन्दू, मुसलमान आदि धर्मों के आचार्यों ने धर्म को समझाने की कोशिश की है, फिर भी यह मसला नहीं हुआ। अब विज्ञान का जमाना आया है। अब सारी दुनिया का अध्यात्म का आधार लेना होगा। पवित्रता ग्रहण करनी होगी। विज्ञान के जमाने में राजनीति और पाथक धर्म को छोड़ना होगा और आध्यात्मिकता स्वीकार करनी होगी। सबको इस पर सोचना चाहिए। इसका शुभारंभ शान्ति-सेना और सर्वोदय-सेना के काम से होगा। हम अगर इस काम को उठायेंगे, तो फिर पचासों मसले हल करने की शक्ति भगवान् हमें देगा।

इन्दौर —देवी अहिल्याबाई के स्मारक-समारोह पर
१-८-'६०

इन चित्रों से बच्चों को बचाइये • २

संस्कारी शिक्षिका बच्चों को संस्कार दे

यहाँ आते समय रास्ते में एक बहन कह रही थी कि वह बाल-गाड़ी चलाना चाहती है। हम इस विचार को पसंद करते हैं। बच्चों को भगवान् का प्रतिनिधि समझें, उन पर गुस्सा न करें, उन्हें तरीके से समझाया जाय तो बच्चे सुधरते हैं आदि। यह ज्ञान माता-पिताओं को देना है। इसके अलावा वे कुछ समय बालवाड़ी में आयें, वहाँ पर खुली हवा में रहें और वहाँ संस्कारी शिक्षिका आनन्द-विनोद में बच्चों पर कुछ संस्कार डाले यह मैं पसन्द करूँगा।

बच्चे पूछेंगे, यह इश्तिहार क्या है ?

लेकिन शहरों में बड़े-बड़े इश्तिहार लग रहे हैं, उनका बच्चों पर असर होता है। वे सहज ही पूछ लेते हैं कि यह क्या है ? बच्चों पर ज्यादा असर बाहरी दृश्य का होता है। खाने बैठा है और चिड़िया उड़ रही है, तो उसका ध्यान फौरन चिड़िया की तरफ जायगा। भूख लगी है, खाना मीठा भी लग रहा है, फिर भी चिड़िया को उड़ते देखा कि फौरन उसका ध्यान उसकी तरफ आकर्षित हो गया। वैसे ही बाहर कोई भी स्वरूप बच्चा देखता है, तो वह आकर्षित होता है। वह आपसे पूछेगा कि यह 'हनीमून' क्या है ? यह चित्र किस चीज का है ? उसके दिमाग पर देखने का असर होता है। इसलिए इन्दौर के नागरिकों को चाहिए कि वे इस बारे में सोचें। मकानवाले अपने मकान पर बड़े-बड़े अक्षरों में इश्तिहार लगाने देते हैं तरह-तरह की तस्वीरें लगाने देते हैं उसके उनको पैसे मिलते होंगे, लेकिन वह पैसा विनाशक है। वे अपने मकान पर चाहें तो 'ॐ' 'श्रीराम' या 'बिस्मिल्ला हिर्रहमानुर्रहीम' लिखवा सकते हैं। लेकिन इस प्रकार के और

इश्तिहार नहीं होने चाहिए। जो लोग हमसे सर्वोदय नगर का नकशा माँगते हैं, उनके लिए यह एक पहलू रख रहा हूँ।

नागरिक और निगमवाले सोचें

शहर में रहनेवालों की नजर तारों की ओर नहीं जाती जो हमारी आँखों के लिए और चित्त के लिए पवित्र चीज है। जहाँ देखो वहाँ आग ही आग लगी है, तब सितारों की ओर नजर कैसे जायगी? इसके बदले बड़े-बड़े चित्र लग होते हैं। बच्चा सहज ही पूछ बैठता है कि यह क्या है? ऐसे चित्र लगाने की हम लोगों का सूझती ही नहीं। नगर-निगमवाले भी ऐसे चित्र लगाते हैं या नहीं, मैं तो नहीं जानता। इस बारे में उनसे भी पूछूँगा। मकानवाले इसके बारे में सोचें।

यहाँ पर लोग व्यायाम कर रहे हैं यह देखने को अच्छा लगता है। सभी नियमित व्यायाम करना सीखें, तो अच्छा ही है। शहरों में लोग रात में देर से सोते हैं और देर से उठते हैं। रात को खराब चित्र देखते हैं, तो उसका खराब असर लेकर सोते हैं, उससे दिमाग में अस्वच्छ विचार रहते हैं। हम मुहल्लों की स्वच्छता की बात करते हैं। मुहल्ले की स्वच्छता रखनी चाहिए, लेकिन दिमाग की स्वच्छता भी रखनी चाहिए। दिमाग की स्वच्छता अत्यंत आवश्यक है। मेरे दिल में यह बात तीव्रता से उठ रही है, तो मैंने आपके सामने रख दी।

इन्दौर —पुलिस परेड ग्राउण्ड की आम सभा

१२-८ १

नागरिकों की आँखों पर आक्रमण ३

इन्दौर में बहुत दिन रहने के कारण मैंने यहाँ गन्दे पोस्टर्स देखे, तो मेरी आत्मा में बहुत गहरी ग्लानि पैदा हुई। मैंने कहा

कि ये पोस्टर्स हटने चाहिए। यदि कानून से नहीं हट सकते हैं, तो धर्म से हटें। धर्म कानून से ऊँचा होता है, बढ़कर होता है। जो कानून धर्म का रक्षण नहीं कर सकता उस कानून की दुरुस्ती के लिए कानून भंग करने की जरूरत महसूस होती है।

इन्दौर में मैंने दो-चार दफा इस विषय को लेकर लोगों को समझाया। आम सभा में भी इसके बारे में कहा। फिर दुबारा जब मैं इन्दौर गया तब वहाँ के सिनेमावालों को बुलाया। उनके साथ चर्चा हुई। इन्दौर शहर में इस काम को करने के लिए वजनदार सज्जनों की समिति बनेगी, यह तय हुआ था। सिनेमावालों ने हमें यह वचन दिया कि जिन पोस्टरों पर यह समिति एतराज जाहिर करेगी या अशोभनीय है ऐसा जाहिर करेगी, उन्हें वे हटायेंगे। लेकिन बाद में लोभ के कारण कहिये या दबाव के कारण कहिये, वे लोग मुकर गये।

'रघुकुल रीति सदा चलि आई
प्राण जाय पर वचन न जाई।'

उन लोगों ने वचन का पालन नहीं किया तो वचन का पालन उनसे करवाना मेरा काम था। वह मैंने किया। एक तारीख तय की गयी उनको सूचना दी गयी और उस तारीख को वह पोस्टर हटाया गया और निम्नलिखित वेद-मंत्र के साथ जलाया गया

अग्निमीळे पुरोहितं। यज्ञस्य देवं ऋत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।

बहनों का माकूल जवाब

इन्दौर की कुछ प्रतिष्ठित बहनें सिनेमावालों के पास गयी थीं। उन्होंने बहनों से पूछा कि 'अशोभनीय' की आपकी व्याख्या क्या है? तब बहनों ने जवाब दिया "जिन पोस्टरों को माता-पिता अपने बच्चों के साथ नहीं देख सकते हैं ऐसे पोस्टर अशोभनीय हैं और वे हटने चाहिए।" इससे अधिक माकूल जवाब नहीं

हो सकता। यदि कहा जाय कि कानून उनके पक्ष में है, तो अब परमेश्वर से पूछना होगा। सबसे बेहतर कानून परमेश्वर का है। हम उससे पूछेंगे कि कौनसा कानून हमारे पक्ष में है?

सर्वत्र लोकमत तैयार है

जब से यह काम शुरू हुआ है, हमारे पास जगह जगह से पत्र और तार आ रहे हैं। मैं जानता हूँ कि सारे भारत में इसके लिए लोकमत अनुकूल है।

आँखों पर हमला

हमने गन्दे सिनेमा के खिलाफ आवाज नहीं उठायी है, इसके माने यह नहीं है कि गन्दे सिनेमा चलने चाहिए। उसे बंद करना हो तो जनमत पैदा करना होगा। यही चीज बदलने का सही मार्ग है। सत्याग्रह में कम-से-कम चीज होती है और वह ऐसी चीज कि जिसके लिए सबकी करीब-करीब एक राय हो सकती है। सिनेमा देखने के लिए तो लोग पैसा देकर जाते हैं। अच्छा 'सेंसर' हो, यह माँग की जा सकती है। इसके लिए मन-परिवर्तन करना होगा। लोगों को इसके लिए प्रचार करना होगा। उसमें सत्याग्रह की बात नहीं आती।

लेकिन ये पोस्टर तो रास्ते में होते हैं और हरएक की आँखों पर उनका आक्रमण होता है। शहरों में नागरिकों, बहनों को सिर नीचा करना पड़ता है, नीची निगाहें करनी पड़ती हैं। इससे बदतर कौनसी चीज हो सकती है? आम रास्ते पर चलनेवाले नागरिकों की आँखों पर हमला करने का किसीको क्या हक है? अगर निर्माता ऐसे पोस्टर लगाते हों तो अपने थियेटरों में लगावें। सौन्दर्य-रुचि भिन्न-भिन्न हो सकती है।

लेकिन हरएक नागरिक को अपने कर्तव्य के बारे में जागरूक रहना चाहिए। अपने अधिकारों के बारे में इतनी सजगता नाग-

रिकों में आयी है, यह ठीक नहीं है। सब लोग इस चीज को महसूस करते हैं। शिकायत करते हैं पर कुछ कर नहीं सकते हैं। यह लाचारी बरदाश्त नहीं करनी चाहिए।

यह बुनियादी काम है

लोग मुझसे पूछ सकते हैं कि इतने दिन तक मैंने यह काम क्यों नहीं उठाया? मैं कहता हूँ कि इतने दिनों मैं अन्धा था। लेकिन यह देखने का मौका मुझे इन्दौर में ही मिला। यहाँ सर्वोदय-नगरी बनाने की बात चली। मैंने कहा जब तक यह गंदे पोस्टर्स रहेंगे, *सर्वोदय-नगरी कैसे बनेगी?*

रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने मुझसे कहा "अगर हम इस काम में लगेंगे तो क्या रचनात्मक कार्य ढीला नहीं पड़ेगा?" मैंने कहा "रचनात्मक कार्य नर्मदा में जाय। यह बुनियादी चीज है। वह नहीं बनती है, तो मुझे ऐसे रचनात्मक कार्य में कोई रस नहीं रहा है कि घर में बैठे-बैठे सूत कातें और बाहर ऐसे पोस्टर्स हों।"

अशोभनीय और अश्लील का अन्तर

मैं 'अश्लील' शब्द का प्रयोग नहीं करता हूँ। अश्लील तो कहीं भी बरदाश्त नहीं होगा। मैं शोभनीय और अशोभनीय की बात करता हूँ। मुमकिन है कि जो चीज यहाँ अशोभनीय होगी, वह लंदन में शोभनीय मानी जाय। अपने यहाँ भारत में कुंभ-मेले में लँगोटी पहने साधु घूमते हैं। लेकिन कल लंदन में अगर कोई लँगोटी पहने घूमेगा तो उसे जेल में डाल दिया जायगा। यद्यपि हम भी उसे अच्छा नहीं समझते हैं तथापि सहन कर लेते हैं। लेकिन लंदन में यह बात नहीं चलेगी। पेरिस या लंदन में जो कोई बात वहाँ के रहन-सहन के मुताबिक शोभनीय होगी, वह यहाँ हमारे पैमाने से अशोभनीय ठहरेगी। हर देश की अपनी-अपनी और अलग-अलग सभ्यता होती है, अपना-अपना ख्याल होता

है। उसके मुताबिक चलने का हरएक को अधिकार होता है। इसलिए हिन्दुस्तान में और लंदन में अश्लील तो करीब-करीब एक ही होगा। लेकिन शोभनीय और अशोभनीय में फर्क हो सकता है। ऐसे अशोभनीय पोस्टर या चित्र कोई खुलेआम उपस्थित करें और लोग उसे बरदाश्त करें यह अनुचित है।

आपके नगर में भी एक ऐसी पहरेदार समिति बने जो ऐसे पोस्टरों के बारे में निर्णय दे। यदि कोई अशोभनीय पोस्टर वहाँ हो तो वह हटना चाहिए। यह काम शहर की पलटन कर सकती है। इसमें तो केन्द्रीय सरकार (सेंट्रल गवर्नमेंट) का भी काम करना चाहिए। लेकिन वह नहीं करती है तो मैं क्या करूँ?

सत्याग्रह के सिवा गति नहीं

इन बारह सालों में देश में सत्याग्रह को अगर किसीने रोका है, तो मैंने ही रोका है। और मेरी यदि कोई प्रसिद्धि (रेप्यूटेशन) है, तो वह 'सत्याग्रही' के नाते ही है। बापू ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय मेरा नाम जाहिर किया था। उसके पहले मैं ध्यान-धारणा ग्राम-सेवा नयी तालीम खादी-ग्रामोद्योग आदि काम करता था। मुझे हिन्दुस्तान नहीं जानता था। लेकिन जब बापू ने 'प्रथम सत्याग्रही' के नाते मेरा नाम जाहिर किया, तब देश ने मुझे जाना। इसके बावजूद मैंने इन बारह वर्षों में किसी सत्याग्रह को उत्तेजन नहीं दिया। इसका मतलब यह नहीं कि सब सत्याग्रह गलत थे। मुझे वे नहीं जँचे थे, ठीक नहीं लगते थे। मिसाल के तौर पर, अभी रायपुर में एक प्रदर्शन हुआ। वहाँ कुछ लोगों ने उपवास किया। मैंने अपनी असम्मति प्रकट की थी। मतलब यह था कि वह काम गलत हुआ। लेकिन मैं कौन ऐसा हूँ कि मेरी ही आज्ञा चले? मैंने कहा था कि पंडितजी के सामने उपवास मत कीजिए। उस सत्याग्रह में चित्त-शुद्धि का अंश नहीं रहा ऐसा मैंने माना। [illegible] में मैंने सत्याग्रह की कसौटी रखी है। दूसरों की

कमेटी दूसरी होगी और सत्याग्रह के औचित्य के बारे में हरएक को अपने ही निर्णय को मानना चाहिए। मैं ऊधम मचानेवाला तो नहीं हूँ। मेरी गणना नरम मृदु लोगों में होती है। लोग और मेरे साथी भी कहते हैं कि तुम बहुत नरम हो जरा कठोर बनो। यही मैं कह रहा हूँ कि इस काम में सत्याग्रह के सिवा गति नहीं है। मेरी आवाज सारे भारत में पहुँचे ऐसा मैं चाहता हूँ। इन्दौर में कानून करने पर भी उन लोगों ने वचन का पालन नहीं किया, इसलिए इन्दौर में सत्याग्रह को मान्यता देनी पड़ी।

मैं इसे सत्याग्रह नाम नहीं देना चाहता हूँ। मेरे मकान के सामने यदि मच्छर मरा पड़ा है, खास की तरह आ रही है और उसे न म्युनिसिपैलिटी या निगम हटाता है न उसका मालिक हटाता है तब मैं स्वयं उसे हटा देता हूँ तो क्या वह सत्याग्रह कह जायगा? व्यापक अर्थ में हर कार्य ही सत्याग्रह है। मेरी पदयात्रा साढ़े नौ साल से चल रही है वह भी एक सत्याग्रह है। सत्याग्रही के जीवन का हर कदम सत्याग्रह के लिए ही है।

सिनेमा के खिलाफ नहीं हूँ

मैं सिनेमा उद्योग (इण्डस्ट्री) के खिलाफ सत्याग्रह नहीं कर रहा हूँ। मैं तो विज्ञान (साइन्स) का कायल हूँ। उसके अंतर्गत सिनेमा का विकास हो ऐसा चाहूँगा। अच्छे-अच्छे सिनेमा या चित्र निकलें, निकले भी हैं। तुलसीदास और तुकाराम के जीवन-चरित्र की फिल्म बनी है। मैं कहता हूँ कि अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय हुए बिना विकास संभव नहीं है। उसके बिना दुनिया नहीं बचेगी। यह मैं इन दिनों हमेशा कहता हूँ।

अशोभनीय पोस्टर हटे बिना चैन नहीं

मैं चाहता हूँ कि रात में ९ बजे के बाद 'शो' न चले। मैं इलाहाबाद गया था। वहाँ लोगों ने मुझे 'मानपत्र' दिया।

(मैंने कहा कि आपको तो दान-पत्र देना चाहिए।) सभा टाउन हाल में हुई थी और टंडनजी उस सभा में हाज़िर थे।

उस 'मानपत्र' में म्युनिसिपल्टी ने कहा था कि सिनेमा के दो 'शो' नहीं होने चाहिए। इस तरह का प्रस्ताव म्युनिसिपल्टी ने किया था। लेकिन वह प्रस्ताव मध्यप्रदेश-सरकार ने नामंजूर किया। ऐसी शिकायत उस मानपत्र में थी। अब मुझे नहीं मालूम कि सरकार ने उसे नामंजूर क्यों किया? आमदनी का सवाल था या विधान का, मुझे मालूम नहीं। इन दिनों जहाँ धन आता है, वहाँ बुद्धि का निधन हो जाता है, बुद्धि गायब होती है।

मैं नहीं जानता कि कौनसा सवाल था। लेकिन इसमें मन-चाहा पतन हो सकता है। सिनेमा अच्छा हो, उसका एक ही 'शो' हो, इसमें सत्याग्रह का सवाल नहीं आता है। लेकिन आँखों पर अशोभनीय पोस्टरों का आक्रमण नहीं होना चाहिए, इसके लिए सत्याग्रह उचित है। उसके खिलाफ मैंने जेहाद ज़ाहिर किया है।

जबलपुर
११-११-'६

विषयासक्ति की मुफ्त और लाज़िमी तालीम ४०

इन्दौर में एक अनुभव आया, जिसने हमारे लिए काम का नया क्षेत्र ही खोल दिया। यह नहीं होता, तो हम अज्ञान में अँधेरे में रह जाते। वहाँ जगह-जगह गंदे पोस्टर हमने देखे। हमने कहा कि ये पोस्टर बाल-बच्चों के लिए 'फ्री एण्ड कम्पल्सरी एज्युकेशन इन सेन्सुअलिटी' (विषयासक्ति की मुफ्त और लाज़िमी तालीम) है। इसका दूसरा नाम अब नहीं है। बच्चों के लिए बड़े-बड़े अक्षर पढ़ने के लिए हम देते हैं—'ग' यानी 'गधा' और उसका चित्र भी रहता है, जिससे बच्चा दिलचस्पी से पढ़े। लेकिन पाठ्य-पुस्तक में जितना पढ़ा, अभ्यास होता है, उससे बहुत

बड़ा असर और चित्र पोस्टर पर होता है। ऐसी मुफ्त और प्राथमिक तालीम बच्चों को जहाँ दी जाती है, वहाँ बच्चों के अन्दर अपवित्रता में प्रवेश का यह इन्तजाम देखकर मेरे दिल में अत्यन्त व्यथा हुई और दिल में इतना तीव्र आवेश हुआ कि ऐसे काम के लिए प्राण-त्याग भी कर सकते हैं, ऐसा लगा।

इसके रहते 'बेसिक एज्यूकेशन' का कोई अर्थ ही नहीं रहता है और मुझे आश्चर्य होता है कि इसके रहते हमारी सरकार इतनी गाफिल कैसी है! कितना अंधाधुंध कारोबार है, कितना अज्ञान है! ऐसी सरकार की हस्ती भी समाज के लिए भयानक मालूम होती है। इसके रहते समाज में नैतिक वातावरण नहीं रह सकता है और देश फिर से गुलाम हो सकता है।

जहाँ इतना दारिद्र्य है, दवा का इन्तजाम नहीं, तालीम अच्छी नहीं है, सामान यहाँ नहीं है, जहाँ पौष्टिक खुराक नहीं, उस देश में बच्चों को बचपन से ऐसी तालीम मिलती है, तो उससे समाज निर्वीर्य होगा और वह न हिंसा की लड़ाई लड़ सकता है, न अहिंसा की लड़ाई। इसलिए मैं इससे बहुत व्यथित हुआ। उससे मेरे लिए एक कार्यक्षेत्र खुल गया।

हनुमना
१ ११ ६

वासना की यह अनिवार्य शिक्षा फौरन बन्द हो ५

आश्रम-व्यवस्था की रीढ़, उसकी बुनियाद, जिस पर वह खड़ी है, वह है गृहस्थाश्रम। गृहस्थाश्रम के दो तत्त्व हैं, कारुण्य और और पावित्र्य, जिसके आधार पर वह उज्ज्वल बनता है और देश को तेजस्वी संतान देता है। हमने कारुण्य को प्रेरणा देनेवाला

का अधिकार आपको नहीं है। मुझे दुःख इस बात का है कि इससे गृहस्थाश्रम की बुनियाद ही उखड़ी जा रही है। इस परिस्थिति के रहते न नयी तालीम का कोई अर्थ होता है, न पुरानी तालीम का। बच्चा अक्षर सीखता है, तो एकाग्र होकर पढ़ता है और चित्र देखता है। ऐसे अपरिपक्व मन के बच्चे पर इन गंदे चित्रों का क्या संस्कार होता होगा? ऐसी हालत में तालीम का कोई अर्थ ही नहीं रहता। इसलिए मैं बहुत तीव्रता से सोचता हूँ। मैंने तो यहाँ तक सोचा था कि इंदौर के मेरे साथी अगर जरा इधर उधर करते याने सत्याग्रह करने में हिचकिचाते तो मैं आसाम का रास्ता छोड़कर ट्रेन में बैठकर इंदौर जाता। मेरी समझ में नहीं आता कि एक दिन भी उसे कैसे सहन किया जाता है? इसे मैं पावित्र्य का आन्दोलन मानता हूँ।

लोग कहते हैं कि कैलेंडर भी इन दिनों भद्दे बनाये जाते हैं। उनमें राधा-कृष्ण, महादेव-पार्वती के भद्दे चित्र दिखाते हैं। वह बात भी इसमें आती है, लेकिन ये गंदे इश्तिहार तो बाहर दीवाल पर होते हैं। इसलिए जो रास्ते में चलता है उसकी आँखों पर आक्रमण होता है। मैंने पिछले बारह साल में सत्याग्रह को रोका है। मेरे जैसे को इस मामले में सत्याग्रह करना पड़, तो सरकार की क्या इज्जत रहेगी मालूम नहीं। मैं सिर्फ बाहरी चीज की बात नहीं करता हूँ। सिनेमा भी गंदे नहीं होने चाहिए। इतना ही नहीं सिनेमा गंदे न हों और अच्छे सिनेमा हों तो भी रात को दस बजे के बाद न हों। पर वह लोक-शिक्षण का विषय है, सत्याग्रह का विषय नहीं हो सकता। सामने सुअर मरा पड़ा है। उसे दूसरा कोई हटाता नहीं तो उसे हटाने के लिए सत्याग्रह की जरूरत नहीं। अगर मैं उसे हटाता हूँ तो कानून के खिलाफ काम करता हूँ, ऐसा नहीं होगा। हरएक नागरिक का कर्तव्य है कि वह उसे हटाये। इसी तरह इन इश्तिहारों का है। अगर हम समझते हैं कि ये चित्र

सुन्दर हैं, 'आर्टिस्टिक' (कलात्मक) हैं, तो उन्हें अपने घरों में रखिये। सार्वजनिक स्थानों में ऐसे इश्तिहार रखना रास्ते में घूमने-वाले मुसाफिर की आँख पर आक्रमण करना है। इसीलिए मैंने इसे 'फ्री एण्ड कम्पल्सरी एज्यूकेशन इन सेन्सुअलिटी' यानी 'वासना का निःशुल्क अनिवार्य शिक्षण' कहा है। इस प्रकार जो शिक्षण चल रहा है वह फौरन बंद होना चाहिए।

गया
८ १-'६१

समाज-शुद्धि

[काकासाहब कालेलकर]

अस्पृश्यता-निवारण के आन्दोलन का ताजा अनुभव हमारे पास है। अछूतों को पाठशाला में आने नहीं देना, सार्वजनिक रास्ते पर से चलने नहीं देना, कुएँ में से पानी निकालने की सहूलियत उन्हें न रहे, मन्दिर में कीर्तन आदि सुनने के लिए बैठने की बात तो दूर। ऐसी जब हालत थी और अंग्रेज सरकार भी इस रिवाज को बरदाश्त करती थी, कभी उसका समर्थन करती थी, तब समाज के नेताओं ने लोगों की धर्मबुद्धि जाग्रत करने की कोशिश की। इस ढंग का आन्दोलन जगह जगह चला, तब गांधीजी ने इस सारे सवाल को राजनैतिक क्षेत्र में लाकर राष्ट्रीय पैमाने पर इस सामाजिक अन्याय और पाप का निवारण करने का ठाना।

तब से सवर्ण और अस्पृश्य दोनों कहने लगे कि इसके लिए कानून बनाना जरूरी है। देश के सभी सुधारकों ने अस्पृश्यता-निवारक कानून बनाने पर जोर दिया। प्रांतीय सरकारों ने छोटे-बड़े कानून बनाये और स्वराज्य की स्थापना होते ही राष्ट्रीय विधान के द्वारा राष्ट्र ने घोषित किया कि किसीके भी प्रति अस्पृश्यता-मूलक बर्ताव करना न केवल पाप है किन्तु गुनाह है। राष्ट्र की सरकार ऐसा गुनाह करनेवाले को सजा करेगी। सवर्ण और अछूत हिन्दू और अहिन्दू—सब लोगों ने सर्वानुमति से अस्पृश्यता-निवारक कानून पारित किया। कानून में कहीं भी कचास न रही।

लेकिन जिस दिन कानून बना उसी दिन से लोग कहने लगे कि कानून से क्या होगा? कानून तो कागज पर रह गया। प्रत्यक्ष रूप में अस्पृश्यता कहाँ गयी है? असल बात यह है कि अस्पृश्यता

९० फी-सदी तो चली गयी, लेकिन जो दस टका रही है, वह अब समाज को असह्य हुई है। कानून हुआ इसलिए नहीं, किन्तु कानून बनाते-बनाते जो लोक-जागृति हुई और समाज धर्म-अधर्म का असली स्वरूप समझने लगा, इस कारण अस्पृश्यता चली गयी। कानून बनने से एक तरफ समाज-सुधारकों के हाथ मजबूत हुए, लेकिन दूसरी तरफ, अस्पृश्यता-निवारण के लिए लड़ते रहनेवाला हृदय कुछ ढीला-सा पड़ गया है। जो काम लोकनेताओं को करना चाहिए, वही जब न्यायालय और पुलिस पर हम छोड़ देते हैं, तब सुधार की तेजस्विता कुछ कम हो ही जाती है।

मद्यपान-निषेध का भी ऐसा ही हुआ है। बम्बई का अनुभव हमारे पास है ही। यहाँ की सरकार ने मद्यपान-निषेध का कार्यक्रम बड़े ही उत्साह से अपनाया, कानून पास किये। पुलिस महकमे की सारी शक्ति इस कार्यक्रम के पीछे लगायी। लेकिन उसके साथ मद्यपान-निषेध का आन्दोलन सिपाही आन्दोलन बना। रचनात्मक कार्यक्रम में भी अस्पृश्यता-निवारण का हिस्सा रस्म अदा करने की एक बात हो गयी।

कानून कानून है। उसकी सारी शक्ति, उसका वीर्य पुलिसों के द्वारा और न्यायालयों के द्वारा समाज-नियन्त्रण करने में लगाया जाता है। अब श्री विनोबा भावे ने अश्लील अथवा अशोभनीय पोस्टरों को हटाने की बात उठायी है। भूदान का कार्य भी नैतिक था। ग्रामदान का कार्यक्रम जीवन-परिवर्तन का था। सर्वोदय-यात्रा का आन्दोलन सामाजिक जिम्मेदारी की ओर लोगों का हृदय जाग्रत करने का था। इन सब आन्दोलनों में आर्थिक बाजू थी ही। चन्द लोगों में त्याग की भावना जाग्रत करके पद्दलित समाज को आर्थिक लाभ पहुँचाने की बात उसमें थी। आन्दोलनों का प्रत्यक्ष लाभ जनता देख सकती थी।

सार्वजनिक स्थानों में से अशोभनीय पोस्टरों को हटाने का

कार्यक्रम प्रधानतया नैतिक है, जीवन-शुद्धि का है। श्री विनोवा ने यह आन्दोलन योग्य समय पर उठाया है। साथ-साथ उन्होंने उसमें सिनेमा भी शामिल की है। सिनेमा-घर में जहाँ लाग दाम देकर स्वेच्छा से प्रवेश करते हैं उन घरों का नैतिक वायुमण्डल सुधारने की बात इस आन्दोलन में नहीं है इसलिए उसे उठाया नहीं है। उनका कहना है मैं इस देश का एक नागरिक हूँ। शहर के और गाँव के रास्ते आने-जाने का मेरा अधिकार है। मेरी भावना का ख्याल न करते हुए अगर कोई रास्ते पर नंगा नाच करे, दुर्गन्ध चीजें रास्ते पर फेंके तो वह मेरे जन्मसिद्ध अधिकार पर आक्रमण है। मैं उसे बरदाश्त नहीं करूँगा। रात का बारह बजे या दो बजे अगर कोई जोर जोर से गाना-बजाना चलाये शोरगुल करे और मेरी नींद में खलल पहुँचाये, तो शिकायत करने का मेरा अधिकार है। शान्ति का भंग करनेवाले को प्रतिबन्ध करने की सूचना मैं नगरपालिका को और सरकार को कर सकता हूँ और रक्षा की माँग कर सकता हूँ। मेरी नजर को, मेरी सामाजिक और नैतिक स्वच्छता की कल्पना को आघात पहुँचानेवाली चीज को रोकने का अधिकार मुझे होना चाहिए।

हम मानते हैं कि श्री विनोबा की माँग न्यायोचित है। ऐसा कानून बनना ही चाहिए। हम यह भी मानते हैं कि श्री विनोबा के जैसे राष्ट्रपुरुष ने जब एक सामाजिक बदी की ओर राष्ट्र का ध्यान खींचा है तब ऐसे कानून बनेंगे भी। कानून बनाना कठिन नहीं है। इसके लिए यह आन्दोलन की भी आवश्यकता नहीं है। यह बदी इतनी बढ़ी है बरोक बढ़ी है कि इसकी दुर्गन्ध हरएक की नाक तक पहुँच गयी है। रशिया और चीन में स्टैलिन और माओ के महाकाय पोस्टर खड़े किये जाते हैं। ऐसे जमाने में हमारे देश में गांधीजी के सौ-सौ फुट ऊँचे पोस्टर कोई खड़े कर देता तो बात समझ में आती। लेकिन पश्चिम का अनुकरण करके

हमारे यहाँ समाज-सेवकों के नहीं, किन्तु समाज की अभिरुचि नष्ट करनेवाले चित्र बनाये जाते हैं। इसका कोई इलाज हो जाना चाहिए। हमें विश्वास है कि थोड़े ही दिनों में कानून तो बन जायगा।

उसके बाद अश्लील और श्लील का भेद क्या है, शोभनीय किसे कहें, अशोभनीय किसे कहें, इसकी चर्चा चलेगी। और श्लील और अशोभनीय किसे कहें इनकी व्याख्या सिनेमा पर अंकुश रखनेवाले कानूनों में है ही। इतना ही नहीं ऐसे कानून का भंग करनेवाले सिनेमा को शुद्ध करने के लिए सरकार की ओर से सेन्सर बोर्ड-शुद्धिमण्डल भी स्थापित है। लेकिन क्या इससे लोगों को सन्तोष है? कानून की व्याख्या में न आते हुए कामो त्तेजक प्रसंग दिखाने की और लोकरंजन करके धन कमाने की विशिष्ट कला का काफी विकास हुआ है।

इस कला ने हमारी धार्मिक भावना पर भी आक्रमण किया है। आजकल हरएक घर में पंचांग की जगह कैलेण्डर रखने की प्रथा चल रही है। ये कैलेण्डर कभी-कभी इतने सुन्दर होते हैं कि उनको देखकर चित्त-वृत्ति प्रसन्न होती है, कलात्मक अभिरुचि शुद्ध होती है। सामाजिक अभिरुचि का विकास करने का यह एक उत्तम साधन है। लेकिन कभी-कभी सर्वोच्च कला कामवासना बढ़ाने की ओर भी लगायी जाती है और इसमें अगर पौरा-णिक प्रसंग पसन्द किये और श्रीकृष्ण और राधा को बीच में ले आये, तो कोई भी चीज कोई अश्लील गिन ही नहीं सकता।

हमारी धार्मिक भावना में इतनी अराजकता है कि गणपति की मूर्तियाँ बनाने में सब तरह की कामुकता आ सकती है। हमारी कवितायों और संस्कृत स्तोत्रों में भी धार्मिक प्रसंगों को लेकर चाहे जितनी अश्लीलता ठूस-ठूसकर भर दी जाती है।

हमारे पुराने मन्दिरों के अन्दर और बाहर दीवारों पर और

शिखरों पर ऐसी अश्लील कामोत्तेजक, बीभत्स और अप्राकृतिक बातें भी बतायी जाती हैं कि देखते शरम आती है।

पश्चिम में एक नया वायु चल रहा है। उसका पुरस्कार करनेवाले कहते हैं कि कामोत्तेजना में बुरा क्या है, अश्लील क्या है? ऐसे लोग टूरिस्ट के रूप में भारत में आकर हमारे मन्दिरों के फोटो लेते हैं। महीनों तक मन्दिरों के पास रहकर अन्यान्य कलाकृतियों के साथ अश्लील मूर्तियों के चित्र भी खींचते हैं और हमारी कलात्मक अभिरुचि की तारीफ भी करते हैं। अभी-अभी की बात है—एक पक्ष कहता है कि फलाना उपन्यास अश्लील है, उसमें स्त्री-पुरुष के सम्भोग के प्रसंग और क्रिया का निर्लज्ज शब्दों में वर्णन किया है, तो दूसरा पक्ष कहता है कि माँ-बाप को चाहिए कि वे अपनी अठारह बरस की लड़कियों को, अपरिणीत कुमारिकाओं को यह उपन्यास खरीदकर भेंट दें। और पश्चिम के लोग तो हमारे हर क्षेत्र में गुरु हैं। क्योंकि जिस चीज को पाक माना उसका समर्थन तो हम करेंगे ही।

और दुःख की बात यह है कि हमारी प्राचीन संस्कृति का गुणगान करनेवाले कई देशभक्त हमारे मन्दिरों में, धार्मिक ग्रन्थों और उत्सवों के रिवाजों में जो अश्लील तत्त्व कभी-कभी आते हैं, उनका गम्भीरता से समर्थन करते हैं। (जब मिस मेयो ने भारत की पन्मर के निन्दा करनी चाही और एक किताब लिखी, तब उसने हमारे धर्म-मन्दिरों की दीवारों पर और शिल्पों पर कैसी-कैसी मूर्तियाँ होती हैं और कामसूत्र में वर्णन किये हुए भाग-आसन बताये जाते हैं उसका जिक्र किया। तब मिस मेयो का जवाब देते हुए गान्धीजी इतना ही लिख सके कि मन्दिरों में जाने-वाले भक्त लोगों का ध्यान इन चीजों की ओर जाता ही नहीं।)

सवाल बड़ा कठिन है। सामाजिक कुरीतियों का रोग पुराना है और इसमें एक ओर रूढ़िवादी धार्मिकों का पुरातन वायुमण्डल

और दूसरी ओर यूरोप-अमेरिका की भोगैश्वर्यप्रधान अभिरुचि का आक्रमण—इसमें से रास्ता निकालना है।

बड़े काम के लिए प्रचण्ड उत्साह से दृढ़ संकल्प से ही प्रारम्भ करना चाहिए।

—'मंगल प्रभात' से

परिशिष्ट : २

पवित्र और महत्त्वपूर्ण आन्दोलन*

[श्री मगनचन्द सुगनचन्द बाफना]

आपने जो आन्दोलन आरम्भ किया है, वह सबसे ज्यादा जरूरी, पवित्र और महत्त्व का है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, यह आन्दोलन केवल बैनर, पोस्टर इत्यादि तक ही सीमित नहीं है, किन्तु इनकी जन्मदात्री फिल्म्स से भी संबद्ध है।

भारत के लाखों नर-नारियों को तथा खास तौर पर बच्चों को प्रतिदिन भ्रष्ट करनेवाले अधिकतर चित्रपट और पोस्टर आदि की ओर सारे देश के समझदार लोगों का ध्यान आकर्षित करके बड़ा ही पवित्र काम का आरम्भ किया है। यह सारे भारत में होना जरूरी है, क्योंकि यह रोग सारे देश में फैला हुआ है। अंग्रेजी में कहावत है कि यदि चरित्र नष्ट हो गया तो सब कुछ नष्ट हो गया और ये फिल्में हमारे चरित्र और शील को ही नष्ट कर रही हैं। मेरा मतलब यह नहीं कि सारी फिल्में खराब हैं परन्तु अधिकतर फिल्में निश्चित रूप से खराब हैं।

मुझे क्षमा करें, यदि मैं पूज्य विनोबाजी से आपके द्वारा नम्र प्रार्थना करूँ कि वे सिर्फ तीन महीनों के लिए इस प्रश्न को

---

* श्री दत्तात्रेय मावलंकर को ता. ८-११-५१ को लिखे गये पत्र से।

अपने हाथों में ले लें और स्वयं इसमें मार्गदर्शन करें। यदि यह हो सके तो यह महान और पवित्र कार्य बहुत जल्दी हो सकेगा। यों उनके आशीर्वाद तो आपके साथ हैं ही।

आपको याद होगा ही कि श्रीमती सौ० शीलावती मुन्शी ने करीब एक वर्ष पूर्व ऐसे ही एक कार्य को अपने हाथों में लिया था। उचित समझें तो इस कार्य में आप उनका भी सहयोग ले लें।

यह काम बड़ा विशाल और कठिन भी है। परन्तु मुझे विश्वास है कि भारत की जनता और खासकर महिलाओं की तरफ से आपको इस कार्य में अवश्य ही अच्छा सहयोग मिलेगा। इसलिए इसे केवल इन्दौर तक ही सीमित न रखें, सारे देश में इसे चलाइये। आपकी संस्था सारे देश में भी फैली हुई है। इसलिए आपके लिए यह कार्य बहुत कठिन नहीं होगा। यह रोग इतना गंभीर है कि यह पोस्टर वगैरह छोटी-मोटी चीजें बदलाने से नहीं जायगा। इसके लिए तो बहुत तेज औषधि देनी होगी, जिससे यह निर्मूल हो जाय। मरी कम्पनी के दो सिनेमाघर भोपाल में हैं। इनमें कुछ फिल्में इतनी खराब आती हैं कि उन्हें चलाने में हमें बड़ी लज्जा आती है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह सरकार को सुबुद्धि और खास तौर पर नैतिक बल दे।

अपना घर ठीक करने के बाद हम विदेशी फिल्मों को हाथ में लेंगे।

ईश्वर आपको प्रेरणा दे कि आप अपनी संस्था के जरिये सारे देश में आम जनता के सहयोग से इस जहरीले काँटे को जड़ से उखाड़कर फेंक दें ताकि देश में उत्तम चित्रपट ही निर्माण हों ताकि मनोरंजन के साथ में समाज की सेवा भी कर सकें।

• • •

परिशिष्ट । ३

सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध-समिति का प्रस्ताव

[१२ नवम्बर १९६ की बैठक में स्वीकृत]

अशोभनीय विज्ञापन

श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त ने इन्दौर में अश्लील विज्ञापन हटाने के लिए जो सत्याग्रह आरम्भ हुआ, उसका पूर्व इतिहास तथा श्री नारायण देसाई ने श्री विनोबाजी से हुई बात की जानकारी दी। चर्चा होकर तय हुआ कि इस सम्बन्ध में निम्न निवेदन जारी किया जाय

"सार्वजनिक स्थानों पर जनता की वासनाओं और विकारों को उत्तेजन देनेवाले विज्ञापन लगाना नैतिक जीवन की बुनियाद पर ही प्रहार करने जैसा है। ये विज्ञापन बालकों के संस्कारों को बिगाड़ने के भी एक बड़े निमित्त हैं। प्रबन्ध-समिति मानती है कि इस प्रकार के विज्ञापनों, पोस्टरों और चित्रों के सार्वजनिक प्रदर्शन के खिलाफ जनमत तैयार करना सर्वोदय-आन्दोलन के बुनियादी कार्यक्रमों में से एक है। अपनी शक्ति और चारों ओर की परिस्थिति को देखते हुए जहाँ भी कार्यकर्ताओं को यह महसूस हो कि यह प्रश्न हाथ में लेना चाहिए, वहाँ पर सर्वोदय-आन्दोलन की अंगभूत प्रवृत्ति के तौर पर वे इस कार्यक्रम को हाथ में लें। खास करके नगरों के लिए यह एक प्रभावी कार्यक्रम हो सकता है ऐसी प्रबन्ध-समिति की राय है।

'समाज में आज कोई भी विचारशील व्यक्ति इस चीज के पक्ष में नहीं होगा कि सार्वजनिक स्थानों पर इस प्रकार लगाये जानेवाले विज्ञापनों या पोस्टरों इत्यादि में किसी भी मर्यादा का पालन न किया जाय बल्कि इन्दौर के अनुभव से और अन्य जगहों

पर हुई प्रतिक्रिया से यह स्पष्ट है कि आमतौर पर लोकमानस इस तरह के अश्लीलतीय चित्रों और पोस्टरों के सार्वजनिक प्रदर्शनों के विरुद्ध है, पर सर्वसाधारण आज यह मान बैठे हैं कि इन चीजों का प्रतिकार करना उनकी शक्ति के बाहर है। लोग इस चीज को बुरी मानते हुए भी एक तरह से इसके बारे में अपनी असहायता महसूस करते हैं जैसे कि और बहुत सी बातों के बारे में। सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का यह कर्तव्य है कि नैतिक जीवन की बुनियाद पर आक्रमण करनेवाली इस बात के विरुद्ध वे जनमत जाग्रत करें और सक्रिय कदम उठायें। आज जो जनमत सुप्त है, वह जाग्रत और प्रकट होना चाहिए और उसकी अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

"प्रबन्ध-समिति का विश्वास है कि विज्ञापन-कर्ता स्वयं भी नागरिक की हैसियत से नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के पक्ष में हैं। आज जो कुछ हो रहा है, उसमें परिस्थिति का और इस प्रश्न पर गहराई से न सोचे जाने का ही दोष मुख्य है। सिनेमा-व्यवसायवाले या अन्य विज्ञापन-कर्ता भी अगर मिलकर मार्ग तो व स्वयं ऐसी मर्यादायें निश्चित कर सकते हैं जिनके पालन से समाज के बुनियादी नैतिक मूल्यों की भी रक्षा हो और उनके व्यवसाय को किसी प्रकार की हानि भी न पहुँचे। सरकारी क्षेत्र के लोग भी जो कि आखिरकार आम लोगों में से ही हैं अवश्य ही इसके अनुकूल होंगे कि सार्वजनिक जीवन में इस प्रकार की मर्यादाओं का पालन किया जाय। सर्व-सेवा-संघ की ओर से इस प्रश्न पर आगे सरकार से बातचीत करने का भी तय हुआ है। यह भी निश्चय हुआ है कि अगर इस प्रश्न को लेकर कहीं सत्याग्रह का सौम्य कदम उठाने की आवश्यकता महसूस हो तो प्रदेशीय सर्वोदय मंडल तथा सर्व-सेवा-संघ उस प्रश्न पर विचार करें और विनोबाजी की भूमिका से सक्रिय कदम उठाया जाय।"

इस सम्बन्ध में भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा भी जो कार्रवाई हो सकती हो यह कराने तथा लोकमत तैयार करने के बारे में चर्चा हुई। तय हुआ कि भारत सरकार के सम्बद्ध मन्त्रियों अधिकारियों आदि से शिष्टमंडल के रूप में मिलने, उन्हें स्मृति-पत्र (मेमोरेंडम) देने व अपने उद्देश्य व कार्यक्रम से परिचित कराने आदि की कार्रवाई श्री देवेन्द्रकुमार और श्री करणभाई करें। ● ● ●

परिशिष्ट : ४

अशोभनीय चित्र एवं विज्ञापन हटाने के संबंध में पत्र-व्यवहार

८ पकासिया इन्दौर
२१ १०-६

प्रिय दादाभाई

आप जानते हैं कि सर्वोदय यानप्रस्थ मण्डल यह प्रयत्न कर रहा है कि नगर के मकानों की दीवालों पर से और अन्य सार्वजनिक स्थानों से सिनेमा के अशोभनीय चित्र हटवा दिये जायँ। गत ता० २८-९-६० को मुझे एक शिकायत मिली कि इन्दौर के मॉन्टगोमरी रेस्टोरेन्ट के सामने नगरपालिका के ऑफिस के नाके के पास 'सम्राट दाग' नाम की फिल्म का एक अशोभनीय चित्र विज्ञापन लगा हुआ है। इस प्रश्न पर विचार करने के लिए नियुक्त कमेटी की बैठक मैंने ता० ९ १०-६० को निमन्त्रित की। इस बैठक में सिनेमा-व्यवसाय के दो प्रतिनिधि श्री मथुरालाल टाकीजवाला और श्री मोहनलाल सोमानिया भी उपस्थित थे। हम सब इस चित्र को देखने के लिए गये और सबकी राय यही रही कि चित्र अशोभनीय है और इसे हटा दिया जाना चाहिए।

दो दिन बाद श्री मधाकालजी ने मुझसे कहा कि इस चित्र को लगानेवाले अजन्ता पिक्चर्स के मालिक इसे हटाने के लिए तैयार हैं। परन्तु बाद में उन्होंने आकर सूचना दी कि उनका विचार बदल गया है और चित्र हटाने से उन्होंने इनकार कर दिया है। तब मैंने ता० १०-१०-'६० को इन्दौर के कलेक्टर को लिखा और उनसे विनती की कि वे अपने अधिकार का उपयोग करके इस चित्र को हटवाने की कृपा करें। परन्तु उनकी तरफ से भी अभी तक कोई कदम नहीं उठाया गया है। तब आज उपर्युक्त कमेटी की फिर बैठक की गयी। उसमें सिनेमा-व्यवसाय के दो प्रतिनिधि श्री वात्या छिब्बरे, श्री देवेन्द्र गुप्त और आप स्वयं भी उपस्थित थे। हम अजन्ता पिक्चर्स के कार्यालय पर गये। परन्तु ज्ञात हुआ कि इस कम्पनी के मुखिया कहीं इन्दौर से बाहर गये हुए हैं और ८-१० दिन उनके लौटने की सम्भावना नहीं है। कम्पनी के मैनेजर ने हमको एक नया चित्र भी दिखाया, जो पहलेवाले चित्र से भी बुरा था। प्रकट था कि चित्र का मालिक उस चित्र को हटाना नहीं चाहता। इसलिए निश्चय किया गया कि अब इसमें अधिक समय खराब नहीं करना चाहिए और इस सम्बन्ध में उचित और आवश्यक कदम ही उठाना चाहिए।

इसलिए जैसा कि आपने चाहा है मैं सारी वस्तुस्थिति आपके सामने रख रहा हूँ। कमेटी की राय है कि वह चित्र अशोभनीय है और अब हम विषय में यह कुछ भी करने में असमर्थ है।

भवदीय
डी० यही रंगे
अध्यक्ष सर्वोदय-वानप्रस्थ-मण्डल इन्दौर

श्री अध्यक्ष महोदय
सर्वोदय-वानप्रस्थ-मण्डल इन्दौर

आपका दि० २६-१०-'६० का पत्र मिला। खेद का विषय है कि आप जैसे अनुभवी, शान्तवृत्ति के महानुभावों के मण्डल

सिनेमा-मालिकों एवं वितरकों के सम्मुख व्यर्थ सिद्ध हो रहा है। शायद शासकीय अधिकारीगण भी कोई कदम उठाने में झिझक रहे हैं।

जहाँ राष्ट्र के चारित्र्य का सवाल आ खड़ा होता है और सारे शान्तिमय, वैध समझाने के उपाय अवरुद्ध हो जाते हैं, वहाँ सत्याग्रह का क्षेत्र प्रारम्भ होना चाहिए।

इस दिशा में शीघ्र कदम उठाया जायगा। पू० बाबा को भी अविलम्ब सूचना दे रहा हूँ।

उम्मीद करता हूँ कि अन्तिम क्षण में भी इन प्रदर्शकों को भगवान् सद्बुद्धि देगा और वे स्वयं उन पोस्टरों को हटा लेंगे।

म० प्र० सर्वोदय-मण्डल — स्नेहांकित
विसर्जन-आश्रम ([illegible]) — दादाभाई नाईक
इन्दौरनगर २१-१०-६ — अध्यक्ष

मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल, विसर्जन-आश्रम, इन्दौर

फोन नं० ७१०९ — ता० २८-१-६०
पत्रांक २१ ७।९

श्रीप्रोप्राइटर महोदय,
अजंता पिक्चर्स, फिल्म-कालोनी,
इन्दौर

विषय अशोभनीय विज्ञापनों के विरोध में उचित कदम उठाने के संबंध में।

श्रीमान् महोदय,

मनोरंजन के व्यापार के रूप में सिनेमा सबसे सुसंगठित और प्रभावशाली उद्योग है तथा हर शहर में इसका असर उन हजारों लोगों पर रोज पड़ता है, जो सिनेमा देखने जाते हैं। साथ

ही-साथ सिनेमा के विज्ञापनों के द्वारा उसका जो प्रचार सारे शहर में होता है, उससे शायद ही कोई अछूता बच पाता है। इन विज्ञापनों द्वारा लोगों को सिनेमा विशेष देखने को आकर्षित करना आज जायज माना जाता है। पर जो पोस्टर तथा बड़े बड़े चित्र सड़क पर चलनेवाली आबाल-वृद्ध जनता के सामने हर मोड़ की जगह पर प्रदर्शित किये जाते हैं, उनमें शालीनता का ध्यान कभी-कभी नहीं रखा जाता है। यह आवश्यक है कि किसीको भी मासूम और किशोर लड़के-लड़कियों के विकासोन्मुख मानस पर बुरा प्रभाव डालने का अधिकार न दिया जाय। यदि पोस्टर तथा सिनेमा-विज्ञापनों में ऐसे चित्र सड़कों पर प्रदर्शित किये जाते हैं तो कर्तव्यनिष्ठ नागरिक को उन्हें हटवाने का प्रयत्न करना चाहिए।

इन्दौरनगर में सर्वोदय की दिशा में लोक-जीवन उत्तरोत्तर विकसित हो, यह प्रयत्न श्री विनोबाजी की प्रेरणा से सभी के सहकार से हो रहा है। सिनेमा-विज्ञापनों में लोकाचार की मर्यादाओं के पालन के संबंध में भी नागरिकों की कई बैठकें हुई हैं तथा सर्वोदय-वानप्रस्थ-मंडल के अन्तर्गत एक कमेटी जिसमें २ सिनेमा चालक तथा सर्वश्री पी० डी० रांगे, रिटायर्ड आई० सी० एस०, श्री के० एम० बापना तथा श्री वात्स्यायनजी प्रभृति सम्मिलित हैं, इस काम के लिए बनी थी कि वे सिनेमा विज्ञापनों पर नजर रखें और यदि कोई चित्र दुष्प्रभाव डालनेवाला दिखे तो उसे हटवाने का प्रयत्न करें। इस समिति द्वारा आपका [illegible] फिल्म का विज्ञापनवाला चित्र जो रेलवे-स्टेशन वाली सड़क पर लगा हुआ है, कमेटी ने सर्वसम्मति से अशोभनीय माना है और उसे हटवाने के लिए आपका ध्यान चित्र की अशोभनीयता की ओर खींचा गया तथा उसे हटवाने की प्रार्थना की गयी थी।

इसमें नाकामयाबी मिलने पर नगर-निगम, कलेक्टर तथा कमिश्नर को हटवाने का आग्रह किया गया परन्तु फिर भी पोस्टर लगा ही हुआ है और एक माह से आने-जानेवाले बच्चे-बच्चियों तथा लोगों को एक गलत दृश्य देखने को मजबूर किया जा रहा है। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि लोकाचार की मर्यादा पालने हेतु नैतिक नियम को कानूनी नियम से ऊँचा मानकर उस पोस्टर को हटा दिया जाय, इसके हेतु इस पत्र द्वारा निवेदन है कि इस विज्ञापन को आप शीघ्र ही ता० ४ नवम्बर, '६० तक हटा देने की कृपा करें। इन्दौर के नैतिक वातावरण को शुद्ध करने और ऊपर उठाने में आपका भी सहयोग हो, यह आप भी पसंद करेंगे, ऐसी आशा है और एक गृहस्थ के नाते इसे आप अपना कर्तव्य भी समझेंगे और इस विज्ञापन को हटा देंगे।

पूज्य विनोबा इस प्रश्न के बारे में कितने गम्भीर हैं, यह आपको उनके नीचे लिखे शब्दों से ज्ञात हो ही गया होगा, जो उन्होंने इस विषय में हुई बैठक में सिनेमा-संचालकों को सभा में कहे थे और जिसमें शायद आप भी उपस्थित थे "इस प्रश्न के बारे में मेरे विचार स्पष्ट हैं। इस काम में शासन या आप लोगों की तरफ से ढिलाई रहेगी तो इस पर अ० भा० सत्याग्रह भी शुरू हो सकता है। इस वक्त तक गलत सत्याग्रह को रोकने की कोशिश मैंने की है। मगर यह सत्याग्रह मैं शुरू करवाऊँगा। सत्याग्रह की मानसिक तैयारी हो चुकी है मगर आप स्वयं गंदे पोस्टर हटाने का निश्चय कर लें तो अच्छा ही है। नहीं तो सत्याग्रह होगा।

यदि आपने इस विषय में उपयुक्त कदम नहीं उठाया तो हमें ऊपर लिखी दशा में ता० ५-११-'६० की सुबह को सत्याग्रह

करके उसे हटाने पर मजबूर होना पड़ेगा, सो सूचनार्थ निवेदन है।

निवेदक

(सही देवेन्द्रकुमार गुप्ता)	(सही बाबाभाई मार्देक)
मंत्री	अध्यक्ष
म प्र सर्वोदय-मंडल	म प्र सर्वोदय-मंडल

परिशिष्ट ५

राष्ट्रपति की सेवा में किया गया निवेदन

महामहिम डॉ० श्री राजेन्द्रप्रसादजी
'राष्ट्रपति' नयी दिल्ली

आदरणीय महानुभाव

इन्दौर नगर की महिला-संस्थाओं और मध्यप्रदेश सर्वोदय मडल की ओर से आपके विचारार्थ और उचित कार्यवाही की दृष्टि से निम्नलिखित निवेदन प्रस्तुत किया जा रहा है

१ चूंकि नगरों के प्रमुख चौराहों पर और दीवालों पर बड़े बड़े विज्ञापन बोर्ड लगाकर उन पर बड़े-बड़े अक्षरों से और चित्रों द्वारा उन-उन मार्गों पर चलनेवाली आम जनता, जिनमें आबाल-वृद्ध नर-नारी रहते हैं का ध्यान अनिवार्य रूप से आकर्षित करके उन्हें प्रभावित किया जाता है।

यह नितान्त जरूरी है कि इन मामलों में एक हद तक शालीनता एवं संयम बरता जाय और जिन प्रदेशों में वे विज्ञापन किये जाते हैं वहाँ की जनता की प्रचलित नैतिक धारणाओं और सांस्कृतिक मर्यादाओं का आदरपूर्वक ध्यान में रखा जाय। यह दुःख का विषय है कि आजकल इन मर्यादाओं को लाँघकर निम्न स्तर के विज्ञापन लगाये जाते हैं जिनमें यौन-सम्बन्ध को नीचे गिराकर तथा समाज-विघातक कार्यवाहियों का चित्रण कर जनता

के नैतिक स्वास्थ्य पर अवांछनीय असर डाला जाता है। पढ़ने के लिए स्कूल-कॉलेजों में आने-जानेवाले मासूम बच्चों और अनुभवी नवयुवक-युवतियों के संस्कारक्षम मानस इन रास्तों पर लगे दृश्यों द्वारा इस तरह मोड़ जाते हैं कि जो उनके घरों में और शालाओं में सिखाये जानेवाले आदर्शों के विपरीत होते हैं।

२. जब कि पैसे देकर दृश्य देखनेवाली सीमित जनता को दरसाये जानेवाले सिनेमा-फिल्मों को भी 'सेंसर' करना उचित माना गया है, तब आम जनता को अनिवार्य रूप से बिना चाह किये दर्शन को मजबूर करनेवाले व खुले विज्ञापन एक तरह से सबकी आँखों पर पूरा आक्रमण ही है, जो आम बिना किसी नियंत्रण के मुक्त प्रदर्शित किये जाते हैं। कतिपय मंदिरों या पुराने ऐतिहासिक स्थानों में, आर्ट गैलरी या म्यूजियमों में ऐसे दृश्य, जिन्हें समाज बर्दाश्त नहीं करता, मिलेंगे। पर उन्हें देखना, न देखना, वहाँ जाना न जाना हरएक की अपनी-अपनी मर्जी पर है। पर यह बात सार्वजनिक स्थानों में लगाये इन विज्ञापनों के बारे में कैसी कही जा सकती है? क्योंकि जान-अनजान जनता की नजरों में वे आते ही हैं और इस तरह उनकी निम्न स्तर की वासनाओं का व्यावसायिक विज्ञापनों द्वारा लाभ उठाया जाता है। अतः ऐसे गंदे विज्ञापनों की अनिवार्य रूप से मुमानियत की जानी चाहिए।

३. भारत की यह मान्यता रही है कि स्त्रीत्व और मातृत्व को आदर की दृष्टि से देखा जाय। यहाँ वैवाहिक जीवन और विवाह को पवित्र माना गया है तथा गृहस्थाश्रम जीवन की साधना का एक अंग माना गया है। यदि देश के इन सांस्कृतिक विचारों पर कोई ध्यान न देकर स्त्री को विषय-भोग का साधन प्रदर्शित किया जाय और हमारी सभ्यता के आदर्शों का उपहास उड़ाया जाय, तब जनता का यह अधिकार है कि वह आगे आकर इसका विरोध करे।

धीरे-धीरे आम धारणाएँ यह बन रही हैं कि व्यावसायिक

माध्यम द्वारा जनता की भावनाओं और संस्कार-मर्यादाओं की कम-से-कम कद्र की जाती है और इस मामले में कोई कुछ नहीं कर पा रहा है। इसके कारण जनता में निरुत्साह पैदा होना स्वाभाविक है और वह अपना आत्मविश्वास खो बैठती है। जब वह देखती है कि नैतिक क्षेत्र में भी उसकी आवाज का कोई असर नहीं होता, तब अन्य क्षेत्रों में भी उसका अभिक्रम मृतप्राय हो जाता है। अतः यह जरूरी है कि सार्वजनिक स्थानों पर लगनेवाले विज्ञापनों पर नैतिकता और सभ्यता की संहिता का असर होना ही चाहिए।

४ अभी-अभी श्री विनोबाजी भावे ने इस समस्या को प्रकाश में लाया है। उन्होंने इन्दौर की जनता को यह सलाह दी है कि नगर में अशोभनीय पोस्टरों को बर्दाश्त न किया जाय। उन्होंने इसके हेतु एक निर्णायक समिति सिनेमावालों तथा सम्भ्रान्त विज्ञापन-कर्ताओं की सलाह से बनायी। यह समिति जिस चित्र के बारे में सर्वानुमति से इस निर्णय पर आये कि यह पोस्टर अशोभनीय है, उसे विज्ञापन-कर्ता हटा दें। यदि वैसा करने से वह इनकार करें, तो शासन द्वारा उसे हटवाया जाय। परन्तु यह सार्वजनिक व्याधि समझाने-बुझाने तथा कानून द्वारा भी न हटायी जा सके तो नागरिक उसे शान्तिपूर्वक, संयमित तरीके से स्वयं हटाकर जो नतीजे हों खुशी-खुशी उन्हें भुगतने को तैयार रहें। इस सम्बन्ध में उनकी वेदना निम्न शब्दों में स्पष्ट झलकती है

"जब तक हमारे देश के नगरों में सार्वजनिक स्थानों पर इस ढंग के अशोभनीय पोस्टर लगाए रहेंगे, जिनके जरिये बच्चों को हीन भावनाओं का ही और कम्पलसरी शिक्षण दिया जाता रहेगा, तब तक देश में चलनेवाली नयी अथवा पुरानी तालीम या कोई भी समाज-सुधार का काम कोई अर्थ नहीं रखता।"

गणमान्य जनतन्त्र में शासन से यह अपेक्षा करना क्या उचित नहीं है कि जनता की भावनाओं और धारणाओं को ध्यान में रखकर वह उचित कार्यवाही स्वयमेव करे। शासन मौका अवसर न आने दे कि जनता निराश होकर और शासन में विश्वास खोकर या आश्वासन न पाकर सत्याग्रह के लिए तैयार हो जाय।

अतः महामहिम से अन्तःकरणपूर्वक नम्र विनय है कि वे शासन द्वारा अशोभनीय एवं अश्लील विज्ञापनों के प्रदर्शन पर रोक लगाने लायक असरकारी कानून बनावें या मौजूदा कानून की अक्षमता और कमी सरकार द्वारा निकालें या मौजूदा कानून यदि इस दिशा में उनकी नजरों में पर्याप्त हैं, तो अपने स्थानीय जिम्मेदार अधिकारियों को निर्देश दें कि कानूनों में, रूल्स और रेग्यूलेशन्स में भी अशोभनीयता या अश्लीलता की स्पष्ट असंदिग्ध व्याख्या इस तरह की जाय कि जिससे कोई भी मनगढ़न्त मानी करे, बालबच्चों और परिवार के साथ जो दृश्य न देख सकें या उन्हें खुले दिल से समझा न सकें वह अशोभनीय और अश्लील होगा।

हमें उम्मीद है कि आपके समय हस्तक्षेप के कारण हमारी यह विनय अविलम्ब मान्य होगी और भारतीय संस्कृति को नीचे गिरानेवाले ये और ऐसे अन्य उत्तेजनात्मक प्रकार अविलम्ब रोक दिए जायेंगे।

हम हैं आपके नम्र

मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल	इन्दौर नगर महिला संगठन
दादाभाई नाइक	चन्द्रप्रभा मोदी
अध्यक्ष	अध्यक्षा
राजेन्द्रकुमार गुप्त	विमल जगदाले
मंत्री	मंत्रिणी

राष्ट्रपतिजी की सहमति

'सर्वोदय प्रेस सर्विस', इन्दौर से प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वोदय-मंडल तथा इन्दौर नगर महिला-संगठन का एक मिला-जुला प्रतिनिधि-मंडल ८ दिसम्बर को राष्ट्रपति महोदय से उनके इन्दौर-आगमन पर रेसीडेन्सी कोठी में मिला। राष्ट्रपति महोदय को प्रारम्भ में श्री विनोबाजी की प्रेरणा से प्रारम्भ किये गये 'अशोभनीय पोस्टर-उन्मूलन अभियान' की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गयी तथा प्रतिनिधि-मंडल की ओर से एक निवेदन-पत्र भी प्रस्तुत किया गया। (पृष्ठ २२ में मुद्रित)

राष्ट्रपति महोदय ने प्रतिनिधि-मंडल की सारी बातचीत बड़े ध्यानपूर्वक सुनी तथा देश में व्याप्त भ्रष्टाचार और अनैतिकता के प्रति दुःख प्रकट करते हुए आश्वासन दिया कि अशोभनीय पोस्टर उन्मूलन के संबंध में वे पूरा प्रयत्न करेंगे—इसमें उन्हें खुशी ही होगी। राष्ट्रपति महोदय ने तत्काल उसी समय अपने सचिव को उचित कार्यवाही के आदेश दिये तथा प्रतिनिधि-मंडल के एक सदस्य के सुझाव पर रेडियो द्वारा गंदे गीत भी प्रसारित न होने देने के सम्बन्ध में नोट लेने को कहा।

अन्त में राष्ट्रपति महोदय ने सर्वोदय-मंडल द्वारा प्रारम्भ किये गये सुसंस्कारिता-मुहिम का हार्दिक समर्थन करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

अशोभनीय पोस्टर्स हटाकर नगर को स्वच्छ एवं आदर्श बनायें

उसी दिन इन्दौर नगरपालिका-निगम द्वारा आयोजित मानपत्र समारोह में भाषण देते हुए राष्ट्रपति महोदय ने कहा : "मैंने सुना है कि पू. श्री विनोबाजी ने आपके इन्दौर शहर को सर्वोदय का

एक केन्द्र बनाया है, जहाँ वे अपनी साधना को साकार देखना चाहते हैं। वे इस नगर को स्वच्छ नगर के रूप में चाहते हैं। परन्तु केवल बाहरी स्वच्छता से काम नहीं चलेगा। इसलिए उन्होंने यह भी आन्दोलन शुरू किया है कि भद्दे नक्शे और चित्र न दिखाए जायँ जिससे लोगों के चरित्र पर असर हो। मैं चाहता हूँ कि आप इस ओर ध्यान दें। यह कार्य दो प्रकार से हो सकता है। विज्ञापनकर्ता या तो गंदे चित्र स्वयं हटा लें या जनता उन्हें देखे नहीं। दोनों अपना कर्तव्य करें। सब स्वच्छ बनें—सब स्वस्थ रहें, यह म्युनिसिपैलिटी का काम है। मुझे विश्वास है कि आप अपने शहर को इतना स्वच्छ बना देंगे कि जो बाहर से आकर यहाँ बसें, वो खुश हो जायँ।" • • •

परिशिष्ट : •

चरित्रनाशक फिल्मों पर भी प्रतिबंध हो

[श्री मन्सूर शरीफ, एम. एल. ए., बैंगलोर]

सिनेमा के भद्दे विज्ञापनों का आज यत्र-तत्र जो प्रदर्शन हो रहा है, उसके खिलाफ देश के कई भागों में एक जबरदस्त आंदोलन उठाया गया है। अशोभनीय विज्ञापनों का तरुणों के मस्तिष्क पर तथा बच्चों पर जो असर हो रहा है, वह स्पष्ट है। अतः कई जगह विज्ञापनों में तथा खासतौर पर पत्र-पत्रिकाओं में भी सुधार करने का सोचा गया है। हो सकता है कि इसमें भी विरु-धार्मी कुछ ऐसे व्यक्तियों का ध्यान न मिले जो जीवन के व्यवहार सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करते। पर इस प्रश्न के दूसरे पहलू का विचार न करें, तो शायद [illegible] कि आज प्रदर्शित की जानेवाली, खास तौर पर विदेशी फिल्में और विज्ञापन चरित्र के लिए घातक हैं। राजाजी का इस बात से कि "फिल्मों

का पूर्ण रूप से बहिष्कार किया जाय", कोई भी सहमत नहीं हो सकता।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज आम तौर पर सिनेमा मन बहलाने तथा आराम का प्रबल साधन माना गया है। फिर भी यत्नपूर्वक सुधारकर हम फिल्मों को ऐसे साँचे में ढाल सकते हैं जिससे उनका घातक प्रभाव कम-से-कम पड़े। बहुत से फिल्मों के विषय तो बिल्कुल ही उपदेशपरक नहीं होते। इसका परिणाम आज हम कम-से-कम पाश्चात्य देशों में तो जरूर ही देख रहे हैं—यत्र-तत्र परिभ्रंश तथा यौन-पातकों की भयानक वृद्धि के रूप में। 'ब्रिटिश सिनेमैटोग्राफिक इन्स्टिट्यूशन' की रिपोर्ट के मुताबिक ग्रेट ब्रिटेन में १९५ में बनी फिल्मों में से ७० प्रतिशत फिल्में अपराध तथा यौन से सम्बद्ध विषयों पर आधारित थीं। इस विषय से सम्बन्ध रखनेवाले एक अंग्रेज युवक पत्रकार ने लिखा कि जहाँ यौन-अपराधों का विचार किया जाता था उस कोर्ट में वह लगातार ४ मास तक आता रहा। वहाँ उसने देखा कि अपराधियों से सम्बद्ध अपराधों के बारे में पूछने पर जज को बार-बार बिना किसी पक्ष के एक ही उत्तर मिलता था—अपराधी वही बात करना चाहते थे जो फिल्म में दिखायी गयी थी। हैम्बर्ग युनिवर्सिटी के प्राध्यापक [illegible] ने बताया है कि पश्चिम जर्मनी में दिखायी गयी १३ [illegible] फिल्मों में से ११० फिल्में [illegible] [illegible] ६ [illegible] और ७० अन्य पापों से सम्ब[illegible] [illegible] कहानी स्पष्ट ही बता रहे हैं।

[illegible] फिल्मों [illegible] पर अन्दाजा लगता है। इन [illegible] में [illegible] पता [illegible] है कि अगर समय पर ही [illegible] फिल्मों पर युक्तिपूर्वक रोकथाम न लगायी गयी, तो ये समाज की मु[illegible] [illegible] तरह विषाक्त बना देंगी। यह दुर्भाग्य की बात है कि यह विष भारत में धीरे-धीरे फैल रहा है।

"मुख्य बात यह है कि मैंने जिन सत्याग्रहों को अब तक रोका है, उनमें से कोई भी गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए नहीं था। सत्याग्रह के लिए इससे अच्छा निमित्त और क्या हो सकता है? इन्दौर से अच्छा स्थान भी नहीं हो सकता इससे अच्छा मुहूर्त भी नहीं हो सकता और इससे अच्छा तरीका भी नहीं हो सकता।"

उस दिन करीब डेढ़ घंटे चर्चा और फिर अगले पाँच दिन तक रोज प्रसंगोपात्त चर्चा चलती रही। पहले दिन ही मुझे लगा कि मैंने जो-जो मुद्दे खड़े किये थे उनमें से बहुतसों पर विनोबा पहले से ही सोच-विचार कर चुके थे। इस प्रश्न पर विनोबा के मन में तीव्रता थी, लेकिन उनका चिंतन अक्रोध-चिंतन था।

चारों मुद्दों पर चर्चा

मुझे विनोबा से मुख्य तौर पर चार मुद्दों के बारे में चर्चा करनी थी। एक तो यह कि अश्लील क्या और शिष्ट क्या, यह मतभेद का विषय हो सकता है। दूसरा मुद्दा यह कि इस प्रकार के आन्दोलन के लिए जनमत तैयार करने के लिए पूर्वतैयारी होनी चाहिए, वह शायद नहीं हुई थी। तीसरा यह कि जिस प्रकार सत्याग्रह होने जा रहा है, वह प्रक्रिया सौम्य नहीं है और चौथा यह कि इस सत्याग्रह से शायद आन्दोलन अपनी मुख्य दिशा से भटक जायगा।

अश्लील और अशोभनीय का फर्क

पहले मुद्दे के बारे में विनोबा ने कहा कि यह बात बिलकुल ठीक है, लेकिन हर देश और हर काल की शिष्टता-अश्लीलता सम्बन्धी एक सर्वमान्य मान्यता होती है। उसके अनुसार इसका निर्णय होना चाहिए। 'अश्लीलता' शब्द शायद संकुचित मालूम हो, इसीलिए विनोबा ने थोड़ी उदारता काम में लेकर 'अशोभनीय'

शब्द का इस्तेमाल किया था। इसके अलावा इन्दौर में अशोभनीय चित्र कौनसे हैं, यह निर्णय करने के लिए नगर के प्रतिष्ठित सज्जनों की एक समिति बनी थी, उसीने वह निर्णय दिया था।

सत्याग्रह की पूर्वतैयारी

विनोबा का मानना था कि इस काम के लिए पूर्वतैयारी हो चुकी थी। स्वयं विनोबा ने इंदौर शहर में १६० भाषण दिये थे। इनमें से बहुत से भाषणों में उन्होंने इस विषय का उल्लेख किया था। नगर की गली-गली में यह विचार पहुँच चुका था। इसके अलावा दुबारा वे खास इसी काम के लिए इंदौर गये थे। उस समय पहले ही प्रवचन में उन्होंने इसका उल्लेख किया था। उसके बाद यहाँ के सिनेमा-मालिक विनोबा से मिले थे और उन्होंने अशोभनीय पोस्टर प्रदर्शित न करने का आश्वासन दिया था। नगरपालिका के मुख्य लोगों को भी इसकी जानकारी थी। इंदौर के नागरिकों को उन्होंने दीवाली तक की मोहलत दी थी, अतः सच पूछिये तो काफी लम्बी सूचना दी जा चुकी थी। इतना होने पर और वचन-भंग होने के बाद भी सर्वोदय-मंडल ने एक सप्ताह की मोहलत दी। इसमें से बहुत से लोगों का ऐसा ख्याल था कि जो नगरपालिका ने प्रस्ताव किया होता और शहर की अलग-अलग संस्थाओं ने भी इस विषय में प्रस्ताव किये होते, तो कदाचित् सिनेमावालों को पोस्टर हटा लेना पड़ा होता।

पोस्टर क्यों जलाया जाय ?

पोस्टर को जलाने की क्रिया के विषय में पहले तो विनोबा ने कहा "मैंने मेरे पिताजी का शव जलाया, मेरी कविताएँ भी जलायीं, इसमें क्या गलत बात हुई ?"

पोस्टर पर कोलतार पोत दिया जाय, इसके बारे में विनोबा ने कहा "चित्र का मुँह काला करना यह अमंगल कृत्य है, पर

उसे अग्नि-नारायण का समर्पण करना मंगल कृत्य है। इसके अलावा इस प्रसंग पर तो वेद-मन्त्रों के उच्चारण के साथ अग्नि-संस्कार किया है, इसलिए उसमें धार्मिकता और गम्भीरता दाखिल हुई है और अशांति का कारण नहीं रहा है।"

मैंने असहमति जाहिर करते हुए कहा "आज तो पोस्टर को आग लगायी है, तो कल दूसरी किसी चीज को भी आग लगायी जा सकती है। गोडसे ने गांधी की हत्या की उस समय उसकी जेब में गीता थी, उससे क्या वह कृत्य धार्मिक हो गया?"

विनोबा ने कहा कि सीधी कार्रवाई में चित्र को आग ही लगानी चाहिए ऐसा उनका आग्रह नहीं है। चित्र को उतार लेना, उस पर रंग छींटना उसका फेंक देना या और कोई दूसरा प्रयोग, जो अधिक योग्य मालूम हो, वह किया जाए, तो उन्हें एतराज नहीं है।

सौम्यतम सत्याग्रह

सौम्य और तीव्र सत्याग्रह के भेद के बारे में अधिक विस्तार से चर्चा हुई। पहले तो विनोबा ने कहा "भूदान, यह सौम्य सत्याग्रह है, शांति-सेना सौम्यतर सत्याग्रह है और अशोभनीय पोस्टर को हटाना यह सौम्यतम।" मुझे इससे सन्तोष होता न देखकर उन्होंने फिर कहा

"सौम्यतम सत्याग्रह उसे कह सकते हैं जिसके बारे में लोगों का कम-से-कम विरोध हो। अशोभनीय पोस्टर लगाने से समाज का कल्याण होता है ऐसा कहनेवाला अगर कोई पक्ष मौजूद हो, तो बात दूसरी है लेकिन ऐसा तो है नहीं। अगर कोई इस प्रकार का विचार पेश करे कि इस प्रकार के शिक्षण से बालकों की भावी जीवन की तैयारी होती है इसलिए ऐसे पोस्टर सार्वजनिक रूप में प्रदर्शित करना अच्छी है तो ऐसे समाज में जिंदा रहने की अपेक्षा मरना या जंगल में चले जाना मैं ज्यादा पसन्द करूँगा। यह तो

हमारी और खास करके बचों की आँखों पर आक्रमण है। ऐसा करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है। यह अन्याय है।"

मैंने कहा "जमीन की मालिकी को भी हम लोग अन्याय मानते हैं, बल्कि यह तो मूलभूत अन्याय है। तो इस अन्याय के विरोध में आप सत्याग्रह की सलाह देंगे क्या ?'

विनोबा "मैं इसको जरूर अन्याय मानता हूँ, परंतु क्या राजाजी भी मानते हैं ? जिस प्रश्न के बारे में राजाजी जैसे सज्जनों का अभिप्राय भी भिन्न हो, वह प्रश्न विचार-विनिमय और व्यापक जनमत तैयार करने का बन जाता है। ऐसे प्रश्नों के बारे में सीधी कार्रवाई नहीं की जा सकती। संतति-नियमन का प्रश्न भी ऐसा ही है। मैं मानता हूँ कि इस मामले में अप्राकृतिक उपायों का अवलम्बन अनैतिक है। परन्तु इन उपायों का प्रचार होना चाहिए, ऐसा माननेवाले भी बहुत से नीतिमान् और करुणावान् पुरुष हैं। अतः यह भी बातचीत और चर्चा का मुद्दा बन जाता है, 'सीधी कार्रवाई' का नहीं।"

यह सत्याग्रह नहीं है

विनोबा ने यह भी कहा कि इसे 'सत्याग्रह' कहने की भी कोई जरूरत नहीं है। सत्याग्रही का जीवन ही एक सत्याग्रह है इस अर्थ में यह सत्याग्रह है, पर प्रतिपक्षी का हृदय-परिवर्तन कराने की दृष्टि से यह सत्याग्रह नहीं है। विनोबा ने कहा कि "व्यक्तिगत हृदय-परिवर्तन करने का हमारा दावा नहीं है। दुर्योधन का हृदय-परिवर्तन तो कृष्ण नहीं कर सके तो मैं किसी व्यक्ति के हृदय-परिवर्तन का दावा करनेवाला कौन हूँ ? अपना प्रयत्न तो औसत आदमी के हृदय-परिवर्तन करने का है। मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि दुनिया में कोई भी व्यक्ति असाध्य दुर्जन है, पर सामान्य जनता का परिवर्तन करने के बाद बाकी के लोगों का परिवर्तन मैं परमेश्वर पर सौंपता हूँ।"

इस कार्यक्रम से आन्दोलन भिन्न दिशा में चला जायगा, यह दलील करते हुए अंग्रेजी शब्द 'शन्टिंग' का उपयोग आगे किया गया था। विनोबा ने कहा "शन्टिंग शब्द अच्छा है। कुछ डिब्बों को एक लाइन पर से दूसरी लाइन पर ले जाने को 'शन्टिंग' कहते हैं। जो डिब्बा 'शन्ट' होता है, वह बाद में मुख्य गाड़ी में जोड़ा जाकर अपने ठिकाने पहुँच जाता है, उसी प्रकार इस कार्यक्रम का भी है। यह डिब्बा कुछ वहीं पड़े रहने वाला नहीं है।" विनोबा का मानना है कि इस आन्दोलन से बहुत से नये लोग सर्वोदय-कार्यक्रम में रस लेनेवाले बनेंगे। एक दलील यह भी थी कि आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में अहिंसक साधनों का उपयोग, यह हमारा ध्येय था। मालकियत-विसर्जन इत्यादि कार्यक्रम इस प्रकार के थे। इस पोस्टरवाले कार्यक्रम में वैसा मूलभूत परिवर्तन करनेवाला तत्त्व कोई नहीं है। विनोबा ने कहा

"सामान्य तौर पर यह बात सही है। मालकियत-विसर्जन का कार्यक्रम, यह इस युग के लिए मूलभूत कार्यक्रम है। परन्तु कितने ही सर्वकालीन धर्म भी होते हैं। गृहस्थाश्रम-धर्म उस प्रकार का है। इसलिए गृहस्थाश्रम पर होनेवाले आक्रमण का मुकाबला करना यह अधिक बुनियादी काम है।" • • •

परिशिष्ट १

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ सत्याग्रह

[सिद्धराज ढड्ढा]

पिछले अगस्त महीने में, जब विनोबा इन्दौर में करीब एक महीना रहे, तब उनका ध्यान शहर में सार्वजनिक स्थानों पर जगह जगह लगे हुए सिनेमा के विज्ञापनों की ओर गया। छोटे-बड़े

कस्बों और शहरों में आये दिन हजारों-लाखों आदमियों की नजरों से ये 'पोस्टर' गुजरते हैं। अधिकांश लोग इन्हें देखते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। सोचें, तो शायद उनके मन पर भी प्रतिक्रिया हो। थोड़े-बहुत जो विचारशील लोग हैं, उनके मन पर आघात तो होता है, लेकिन इस बाढ़ को रोकने में असहायता महसूस करके वे चुप रह जाते हैं। विनोबा की आर्ष-दृष्टि ने देखा कि यह तो जीवन की बुनियाद ही खोखली करने का काम चल रहा है—गृहस्थाश्रम की नींव में सेंध लगायी जा रही है! स्त्री-पुरुषों के आपसी संबंधों में संयम और मर्यादा की नींव पर ही सारा सभ्य समाज खड़ा है। जीवन के जो बहुत-से नैतिक मूल्य हैं, वे इस आधार के बिना टिक नहीं सकते। स्त्री-पुरुष संबंधों की मर्यादा का उल्लंघन करके कामवासना को जाग्रत करनेवाले बड़े-बड़े अशोभनीय चित्र और पोस्टरों के सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित किये जाने से धीरे-धीरे अनजाने, लेकिन निश्चित रूप से, हमारी सारी समाज-रचना की बुनियाद में घुन लग रहा है, यह विनोबा ने तुरन्त महसूस किया। सिनेमा के विज्ञापनों में ही नहीं, आजकल हर प्रकार के विज्ञापनों में, यहाँ तक कि पुस्तकों और पत्रिकाओं पर भी, स्त्री-सौंदर्य का प्रदर्शित किया जाता है। इस बात पर जरा हम गहराई से सोचें, तो महसूस करेंगे कि हम सारी मातृ-जाति का कितना घोर अपमान कर रहे हैं! इन विज्ञापनों का एक ही अर्थ होता है न कि स्त्री केवल पुरुषों की कामवासना को तृप्त करने का माध्यम है?

विचार करें तो हममें से हरएक यह महसूस करेगा। स्त्रियाँ तो इन चित्रों को देखकर अपने-आपको अपमानित महसूस करती ही होंगी, पर कोई गृहस्थ पुरुष भी अपनी स्त्री और बाल-बच्चों को लेकर बाजार से गुजरता हो और उसके सामने इस प्रकार के अशोभनीय चित्र लगे हों, तो वह भी उधर से आँख बचाकर

निकलना चाहेगा। बच्चे पूछ बैठें, जो कि बच्चों के लिए स्वाभाविक है—तो माता-पिता उन्हें जवाब भी नहीं दे सकेंगे कि उन चित्रों का क्या मतलब है। बात टालने की वे कोशिश करेंगे। पर आप जवाब दें या न दें, बच्चा तो अपनी आँखों से ज्ञान ग्रहण करता ही रहता है।

बच्चे को जब वर्णमाला सिखानी होती है तो हम मोटे-मोटे आकार में अक्षरों को पेश करते हैं और बच्चा अनायास ही वर्णमाला सीख जाता है। हम अन्दाज लगा सकते हैं कि वासनाओं को उत्तेजित करनेवाले पोस्टरों, चित्रों आदि से बच्चा कौन-सी वर्णमाला सीखता होगा ?

परिस्थिति की यह सारी गम्भीरता विनोबा की आँखों के सामने आयी और उन्होंने तत्काल ही सार्वजनिक रूप से इस पर प्रहार करना शुरू किया। प्रतिष्ठित नागरिकों से, सिनेमा-व्यवसाय से संबद्ध लोगों से आम सभाओं में और व्यक्तिगत बातचीत में विनोबा ने परिस्थिति की गम्भीरता को लोगों के ध्यान में लाना शुरू किया और यह माँग की कि सार्वजनिक स्थानों में इस प्रकार के चित्र प्रदर्शित करना बंद होना चाहिए। सभी ने महसूस किया कि यह माँग वाजिब है क्योंकि चाहे सरकारी अधिकारी हों व्यापारी हों, सिनेमाओं के मालिक हों नगरपालिका के सदस्य हों सभी तो गृहस्थ हैं और सभी चाहते हैं कि गृहस्थ-जीवन की उचित मर्यादाएँ कायम रहें इसलिए विरोध का कोई सवाल नहीं था। पर पहले कौन करे ? साथ में व्यापार और मुनाफे का सवाल भी बीच में आता ही था। "पोस्टर हटा दिये, तो कहीं हमारे ग्राहक तो कम नहीं हो जायेंगे ?"—इत्यादि शंकाएँ भी मन में उठती होंगी। फिर भी विनोबा की माँग का औचित्य तो सब समझते थे कोई भी अपने दिल पर हाथ रखकर उसका विरोध नहीं कर सकता था।

विनोबाजी को इस तरह की निष्क्रियता असह्य लगी और उन्होंने

किसी सत्याग्रह का नाम सुनकर अगर लोगों में भय या आशंका पैदा होती है, तो मानना चाहिए कि 'सत्याग्रह' सही नहीं है। सार्वजनिक स्थानों पर से अशोभनीय पोस्टर हटाये जा रहे हैं, यह सुनकर किसीको भी भय या आशंका नहीं होती, बल्कि ऐसा लगता है कि जो काम होना चाहिए था, वही हो रहा है। जो पोस्टर लगाते हैं, उनकी पहली प्रतिक्रिया अपने व्यावसायिक हितों के कारण भले ही कुछ विरोध की हो, पर घर में आकर एक गृहस्थी के रूप में अपने बाल-बच्चों के सामने अगर वे इस चीज पर ठंडे दिल से विचार करें, तो उन्हें खुद को भी जरूर यह महसूस होता होगा कि सार्वजनिक स्थानों पर इस तरह गंदे चित्र नहीं लगने चाहिए।

इसी बात को हम एक दूसरी तरह से भी समझ सकते हैं। जिस विषय के बारे में सामान्य तौर पर सज्जनों में कोई खास मतभेद न हो, जिस काम को करने में या होने देने में किसीका विरोध न हो लेकिन फिर भी कुछ स्थापित स्वार्थों के कारण, परिस्थिति के कारण या आज समाज में व्याप्त निष्क्रियता के कारण, वह काम नहीं हो रहा हो तो उसको सम्पन्न करने के लिए किया जानेवाला सत्याग्रह या सक्रिय काम सौम्यतम है, ऐसा मानना चाहिए। लोकशाही में भी ऐसे सत्याग्रह की गुंजाइश है। हाँ जिस बारे में सज्जनों में भी भिन्न-भिन्न मत हों, एक राय न हो ऐसे प्रश्न पर हम कितनी भी तीव्रता महसूस करते हैं, पर उस काम का 'सत्याग्रह' का दबाव लाकर लोगों से मनवाना सौम्य सत्याग्रह की परिभाषा में नहीं आयेगा। ऐसे मामले में पहले हमें लोगों का मत-परिवर्तन या हृदय-परिवर्तन करने की ही कोशिश करनी चाहिए और मत या विचार का परिवर्तन कभी भी दबाव से नहीं हो सकता चाहे वह दबाव प्रत्यक्ष हिंसक हो या शांतिपूर्ण। लोकशाही में सत्याग्रह का स्थान यही

है, इसका मतलब यही है कि जिस विषय में समाज में भिन्न-भिन्न मत हों ऐसे विषय के बारे में हमें किसी भी प्रकार का दबाव लाकर लोगों से बात मनवाने का अधिकार नहीं है क्योंकि लोकशाही में अपने विचार समझाने की और समझाकर दूसरे का मत-परिवर्तन करने की सबको स्वतंत्रता है।

इन्दौर के उदाहरण से यह चीज स्पष्ट हो जायगी। सार्वजनिक स्थानों पर से अशोभनीय चित्र हटाने चाहिए इस बारे में सामान्य तौर पर कोई मतभेद नहीं होगा। अगर शुरू में कुछ विरोध हुआ भी तो वह व्यावसायिक हितों पर धक्का लगने और अज्ञान के कारण ही होगा। इस प्रकार के काम भी, जिन्हें सब लोग चाहते हों होते नहीं हैं यह हमारी जड़ता और निष्क्रियता की ही निशानी है, ऐसे मामलों में जनमत नहीं है सो बात नहीं। जनमत तैयार है लेकिन वह सुप्त है। उस सोये हुए जनमत को सत्याग्रह के द्वारा धक्का देकर जाग्रत करना और जनता की शक्ति को सक्रिय बनाना हर सत्याग्रही का कर्तव्य है।

हमें विश्वास है कि इन्दौर में जो सत्याग्रह किया गया उसके लिए सब लोगों की सहानुभूति होगी और सार्वजनिक स्थानों पर अशोभनीय या अश्लील चित्र नहीं प्रदर्शित किये जाने चाहिए इस बारे में लोकमत जाग्रत और सचेत होकर समाज का यह कलंक जल्दी दूर होगा। ● ● ●

परिशिष्ट : १

इन्दौर में सिनेमा के गन्दे पोस्टरों के प्रदर्शन नहीं होंगे

वानप्रस्थ मण्डली की बैठक में प्रतिनिधियों का निर्णय

इन्दौर, १८ अगस्त। आज सफेद कोठी में वानप्रस्थ मण्डली एवं अन्य निमन्त्रित सज्जनों की एक बैठक आयोजित की गयी, जिसमें उपस्थित सिनेमागृहों के मालिकों ने यह स्वीकार किया कि वे विज्ञापन के हेतु अश्लील एवं अशोभनीय पोस्टरों व चित्रों का प्रदर्शन नहीं करेंगे।

इस बैठक में उपस्थित इन्दौर के छविगृहों के प्रतिनिधियों ने यह भी स्वीकार किया कि इन्दौर में सिनेमाओं के पोस्टर व चित्रों का प्रदर्शन केवल छविगृहों में ही करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए वे तत्पर हैं। इसके अन्तर्गत सिनेमा के पोस्टर व चित्र नगर में कहीं भी न लगाते हुए केवल छविगृहों में ही विज्ञापन हेतु लगाये जायेंगे। अश्लील इश्तिहार व पोस्टर आदि के विरुद्ध जनमानस को जाग्रत करने के लिए भी इस बैठक में विचार किया गया तथा इस कार्य हेतु छह सदस्यीय समिति गठित की गयी है।

वानप्रस्थ मण्डली की बैठक सफेद कोठी में प्रातः १० बजे आयोजित की गयी जिसमें इन्दौर संभाग के आयुक्त, श्री ओक एवं इन्दौर नगर निगम के आयुक्त श्री मसूदकुली खाँ आदि शासकीय अधिकारियों ने भी भाग लिया। इसके अतिरिक्त इस बैठक में इन्दौर के कतिपय छविगृहों के मालिक भी उपस्थित थे।

बैठक के प्रारम्भ में वानप्रस्थ मण्डली के अध्यक्ष श्री रांगे ने बताया कि आचार्य विनोबा भावे इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाना

जाते हैं। उपस्थित व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित करते हुए आपने कहा कि बताया जाता है कि इन्दौर में सिनेमाओं के अश्लील या अशिष्ट पोस्टर या चित्र मकानों पर, चौराहों पर तथा आम रास्तों पर लग रहे हैं जिससे कि नगर के चरित्र पर खराब असर पड़ता है। अन्त में आपने यह भी बताया कि इन पोस्टरों का प्रदर्शन जनता तथा छविगृहों के मालिकों की सहायता से बन्द होना चाहिए।

अश्लील चित्रों के प्रदर्शन से बालकों का जो शील पतन हो रहा है इसके सम्बन्ध में उपस्थित व्यक्तियों ने गम्भीरता से विचार किया तथा सर्वश्री कन्हैयालालजी बापना, [illegible] [illegible], [illegible] बाबूलाल युधिष्ठिर भार्गव सांवरिया एवं सभापतिजी ठाकुरिया ने अपने-अपने सुझाव प्रस्तुत किये। श्री सांवरिया एवं सभापतिजी ने बताया कि वे अश्लील व अशिष्ट चित्रों का प्रदर्शन नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त श्री सांवरिया ने कहा कि सिनेमा एसोसिएशन ने सीधा पोस्टरों का मकान की दीवारों आदि पर चिपकाने का काम एक वर्ष से बन्द कर दिया है।

अन्त में उपस्थित सिनेमा-गृहों के प्रतिनिधियों ने यह तय किया कि इन्दौर नगर में कोई भी सिनेमा के अश्लील व अशिष्ट चित्र या पोस्टर नहीं लगावेंगे तथा सिनेमा के मालिक इस पर भी विचार करेंगे कि फिल्मों के विज्ञापन के हेतु पोस्टर, चित्र आदि अन्य सिनेमाघरों के अतिरिक्त नगर में और कहीं नहीं लगावेंगे।

[illegible] उपस्थित [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] ने यह आश्वासन दिया कि [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] किया जायगा।

[illegible] [illegible] का [illegible] तथा [illegible] [illegible] का [illegible] करने के

लिए एक छह सदस्यीय समिति भी गठित की गयी, जिसमें सर्वश्री वात्स्यायनसाहब सरैट कल्याणमलजी पापना, ममालालजी ठाकुरिया, श्री रंगे मसूदकुली खाँ एवं श्री सोमरियाजी हैं।

'नई दुनिया' १९-८ ६

परिशिष्ट ११

इन्दोर के फिल्म वितरक और प्रदर्शकों से बातचीत

ता. २८ सितम्बर को जो फिल्म-वितरक और प्रदर्शन-कर्ता श्री बाबा से मिले उन्होंने बाबा को बताया कि अब समाज में अश्लील चित्रों के लिए कोई रुचि नहीं रह गयी है। थियेटर्स खाली पड़े रहते हैं। सिनेमा-मालिकों को नुकसान भी होता है। फिल्मों और विज्ञापन के चित्रों के बारे में ऊपर से ही बंदी हो जाय तो सारा काम सरल हो जाय। वितरक पहले से ही चित्र खरीद लेते हैं और उनके पोस्टर्स भी बन जाते हैं। हम भी उनसे बँधे रहते हैं। इसलिए जब पोस्टर्स आते हैं, तो हमें उनका प्रदर्शन करना ही पड़ता है। न करें, तो वितरक हम पर मुकदमा चला सकता है वगैरह।

इसका उत्तर देते हुए बाबा ने कहा "मैं समझा फिल्मों का और चित्रों का भी सेंसर ऊपर से हो। इस संबंध में मैं ऊपरवालों से बात कर लूँगा। पिछले दिनों इंदौर में जो बातें हुईं वे फिल्मवालों के पास पहुँच गयी हैं।

जहाँ तक इंदौर का संबंध है, इसे हम Practical School बनाना चाहते हैं। यहाँ गन्दे पोस्टरों के स्थान पर जहाँ-तहाँ नीति-वाक्य लिखे हों। पोस्टरों को हटाने का अधिकार कलेक्टर को है। अतः हम यहाँ एक कमेटी कायम करेंगे, जो कलेक्टर से गंदे पोस्टरों पर रोक लगाने का अनुरोध करेगी।

मैं अश्लील शब्द का नहीं अशोभनीय शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ। अशोभनीय चित्रों को भी कम-से-कम बच्चों का ख़याल रखते हुए हटा देना चाहिए।

यह कैसी अजीब बात है कि ऊपर से सब कुछ हो। मैं आपको ईमान मानता हूँ। नागरिक को नागरिक समझता हूँ। आपको गधे बनाना नहीं चाहता। पथ पर जो भी कुछ छाप दिया जाय वह कुछ बोल नहीं सकता। इनकार नहीं कर सकता। मगर ईमान तो इनकार कर सकता है। मैं तो इस संबंध में प्राइम-मिनिस्टर से लेकर आप तक सबको नोटिस दे देना चाहता हूँ। इंदौरवालों से ख़ास आशा रखता हूँ क्योंकि यहाँ कुछ संस्कार (Cultore) है।

अंग्रेज़ी और हिंदुस्तानी चित्रों में मैं कोई फ़र्क़ नहीं करता। उनका उपयोग करना या न करना हमारे हाथ की बात है। अमेरिका के इतिहास में एक मनोरंजक घटना है। वे इंग्लैंड की चाय नहीं चाहते थे। तब अमेरिका स्वतन्त्र नहीं हुआ था। फिर भी जब चाय लेकर इंग्लैंड का जहाज़ बोस्टन के बंदरगाह में पहुँचा तो वह सारी चाय समुद्र में फेंक दी गयी।

अशोभनीय पोस्टर सिनेमागृह पर भी न लगें—न भीतर, न बाहर। शोभनीय पोस्टर केवल मकान के भीतर लगायें। अशोभनीय चित्रों के विरुद्ध सत्याग्रह होगा। परन्तु बगैर पूर्व सूचना के कोई चित्र नहीं हटाया जायगा। इस संबंध में जो समिति बनी है उसमें आप वितरक और सिनेमा-मालिकों के प्रतिनिधि हैं ही। ज़रूरत हो तो [illegible] में से और भी [illegible] ली जाय और इस समिति के [illegible]। [illegible] चित्र को हाथ न लगाया जाय। फिर निर्णय हो जाने के बाद उसके अमल की सूरत भी होगी। इस बीच यदि सिनेमा-मालिक ने चित्र नहीं हटाया, तो यह समिति हटा देगी।

इस प्रश्न के बारे में सारे भारत में उत्सुकता पैदा हो गयी है। यदि इंदौर में यह अशोभनीय चित्र हट गये तो सारे भारत में हटने लगेंगे। उदाहरणार्थ पूना के भाइयों ने पूछा है कि इंदौर में यह काम किस प्रकार हो रहा है।"

सिनेमा-मालिकों ने बाबा को आश्वासन दिया कि इंदौर में इस विषय में उनकी तरफ से बाबा को पूरा सहयोग मिलेगा। अशोभनीय चित्र नहीं लगेंगे।

बाबा ने कहा "सहयोग तो अन्यत्र भी मिलेगा परन्तु श्लील और अश्लील की भाँति शोभनीय और अशोभनीय के बारे में मतभेद हो सकता है। इसके लिए यह समिति है और इस समिति में और मेरे बीच मतभेद हुआ, तो हम आपस में समझ लेंगे। अगर कुछ नहीं होगा तो सत्याग्रह काम करेगा ही।"

इस प्रश्न के बारे में मेरे विचार स्पष्ट हैं। इस कार्य में यदि मैं शासन या आप लोगों की तरफ से ढीलपोल देखूँगा तो इस पर भी सत्याग्रह भी शुरू हो सकता है। दस वर्ष तक गलत सत्याग्रहों को रोकने की मैंने कोशिश की है। मगर यह सत्याग्रह मैं खुद चलाऊँगा। सत्याग्रह की मानसिक तैयारी हो चुकी है। अगर आप स्वयं ही गंदे पोस्टर हटाने का निश्चय कर लें तो अच्छा ही है। नहीं तो सत्याग्रह होगा। आपको ये पोस्टर्स पसन्द हों, तो इन्हें अपने घरों में लगाइये। नागरिकों की आँखों पर आक्रमण करने का किसीको हक नहीं है। मकान की दीवार का बाहरी हिस्सा नागरिक जीवन से संबंध रखता है।

सर्वोदय प्रेस सर्विस —'भूमि-क्रान्ति' ७-१०-६

महिलाओं में नव चेतना

पाठकों को शायद ज्ञात नहीं होगा कि ता ५ नवम्बर को

अशोभनीय चित्रवाला जो पोस्टर विधिपूर्वक हटाकर अलग किया गया था, उसके स्थान पर सिनेमावालों ने उसी चित्र को फिर लगा दिया। इसके फलस्वरूप नगर में और देश में काफी प्रतिक्रिया हुई। इन्दौर नगर में महिलाओं ने सभी महिला संस्थाओं की एक प्रतिनिधि बैठक तारीख ७ नवम्बर को बुलायी और उसमें तय किया कि

"सारी सभा इस बारे में एकमत है कि नगर की सड़कों पर स्त्रियाँ इज्जत से निकल सकें और उन्हें किसी चित्र को देखकर आँखें नीची न करनी पड़ें। इसके लिए आवश्यक है कि नारी के शरीर को अश्लील विज्ञापन का साधन न बनाया जाय और विज्ञापनों में सदाचार की मर्यादाएँ बरती जायँ।"

दुबारा तारीख १२ को सभी संस्थाओं की बैठक हुई और एक 'इन्दौर महिला संगठन' नाम की संस्था बनायी गयी। श्रीमती चन्द्रावती मोदी इसकी अध्यक्षा हैं, श्रीमती विमला अग्रवाले मंत्रिणी तथा श्रीमती कलावती किंजवडेकर उपमंत्रिणी हैं। इस सभा ने प्रस्ताव किया

"महिलाओं की यह सभा पू० विनोबाजी के इस सत्-प्रयत्न के लिए सम्मान प्रकट करती है और इस प्रस्ताव द्वारा निश्चय करती है कि सिनेमा-व्यवसायी शीघ्र ही गंदे गीतों और वासनात्मक फिल्मों और गन्दे पोस्टरों का प्रदर्शन बंद कर दें। हम आशा करती हैं कि सिनेमा-व्यवसायी स्वयं ही ऐसे फिल्म और पोस्टर मँगाना बन्द करके समाज धन्यवाद के पात्र बनेंगे।

"हमें यह भी आशा है कि भविष्य में फिल्मनिर्माता व दूसर चित्रों के निर्माता सुरुचिपूर्ण चित्र बनाने की कृपा करेंगे।"

महिला-संस्थाओं का सम्मिलित प्रस्ताव

"सिनेमा तथा अन्य विज्ञापनों के कारण आज समाज पर जो संस्कार पड़ते हैं, उनको ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि

विज्ञापनों में एक मर्यादा बरती जानी चाहिए। आज यह नहीं है। यह बात विशेषतया सिनेमा-विज्ञापनों के पोस्टरों और चित्रों पर लागू होती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि पू० विनोबा ने इन्दौर में इस काम के लिए जो समिति बनायी है, वह जिन चित्रों को अशोभनीय बताये, उन्हें हटाया ही जाना चाहिए। इस विषय में हमारी संस्था की पूरी सम्मति है और इस समिति को उसका पूरा सहयोग रहेगा। जो भी कोई पोस्टर या चित्र हमारी संस्था के सदस्यों को अशोभनीय मालूम होगा उसकी सूचना उपर्युक्त समिति को हम करेंगे और उसे हटवाने के लिए सब प्रकार के वाजिब प्रयत्न करेंगे।"

सरस्वती भगिनी समाज — तुकोगंज भगिनी मण्डल
वनिता सेवा-संघ — रामबाग महिला-समाज
हरसिद्धि महिला सहकारी-संस्था

परिशिष्ट : १२

आगरा का समाचार

प्रतीकात्मक सत्याग्रह की जगह से जब ता० ४ जनवरी को गंदा पोस्टर हटाया गया, तब ५-१-'६१ को 'मुगले आजम' और 'बरसात की रात' वाले सिनेमाओं को नोटिस दी गयी कि वह ता० ६ तक शहर में से अपने गंदे पोस्टरों को हटा लें वरना ता० ७ से पूरे शहर में उन्हें फाड़ने और पोतने का काम शुरू कर दिया जायगा।

'मुगले आजम' के सिनेमा-संचालकों ने पूरे शहर में से गंदे पोस्टर हटा लिये। इस बात की हमें सूचना मिली, तब सिनेमा-संचालकों को हमने इसके लिए बधाई-संदेश भेज दिया।

किंतु 'बरसात की रात' के सिनेमा-संचालकों ने अपने गंदे पोस्टर को नहीं हटाया। तत्पश्चात् पूर्व निश्चयानुसार ता० ७ को

सर्वोदय सेवा-मंडल के सहयोगी कार्यकर्ता और लोकसेवक एक दाहर के मीरा हुसैनी चौराहे पर पहुँच गये। हमारी सभा हो रही थी, उसी समय सिनेमा-संचालकों ने उस बोर्ड को उतरवाकर उठा लिया। तत्पश्चात् कार्यकर्ताओं की टोली कलेक्टरी कचहरी के सामने लग गये चित्र को उखाड़ने गयी। दो हजार की जनता इकट्ठा हो गयी थी। सबके सामने उस पोस्टर पर रंग पोता गया तथा पोस्टर फाड़ा गया।

मूदान-सर्वोदय कार्यालय
धूलिपागज, सागर

परिशिष्ट : ११

देश के कोने-कोने की आवाज

पूर्णिया

अशोभनीय सिनेमा-पोस्टर्स सामग्री या आम जगह पर लगाने के विरोध में ता० १७ दिसम्बर को पूर्णिया-निवासी महिलाओं की सभा हुई। सभा में करीब २०० स्त्रियाँ उपस्थित थीं। श्री दामोदरदास मूँदड़ा रिटायर्ड जज श्री मास्करजी, 'स्वस्तिक' सिनेमा-गृह के मालिक श्री पुसमल सेठ और अन्य सज्जन भी उपस्थित थे। सभा में पहले कुछ बहनों ने सिनेमा-पोस्टर्स से होनेवाले दुष्परिणामों के बारे में भाषण किये। यह सवाल सिर्फ सिनेमा-पोस्टर्स तक ही मर्यादित नहीं है बल्कि सारे समाज के नैतिक उत्थान का यह प्रश्न है। सबके व्याख्यानों में यह आवाज निहित थी कि उसके लिए सिर्फ सिनेमा-पोस्टर्स ही नहीं बरन् होटल दूकानें और अन्यत्र जो-जो अशोभनीय चित्र लगाये जाते हैं उन सबको रोकना चाहिए। इससे भी आगे बढ़कर उन्होंने कहा कि धर्म और भगवान् के नाम से मंदिरों में राधा-कृष्ण और

शंकर-पार्वती के चित्रों का जो विज्ञापन किया जाता है, वह भी बंद करना चाहिए।

बाद में श्री दामोदरदास मूँदड़ा ने इस विषय के बारे में अन्यत्र जो कुछ हुआ उसकी जानकारी दी और आगे के काम के बारे में मार्गदर्शन किया। श्री पुसमल सेठ ने अपने 'स्वस्तिक चित्र-मंदिर' में और अन्यत्र ऐसे पोस्टर्स न लगाने का अभिवचन भी दिया।

इस सभा में इस काम के लिए आगे की कारवाई करने के लिए एक समिति नियुक्त की गयी। उसमें स्त्रियों ने स्वयंस्फूर्ति से अपने नाम लिखवाये। समिति ने नीचे लिखे प्रस्ताव मंजूर किये

(१) विनोबाजी के शुरू किये हुए इस काम में हमारा हार्दिक सहकार है।

(२) 'स्वस्तिक चित्र-मंदिर' के मालिक श्री पुसमल सेठ के अशोभनीय चित्र न लगाने के निश्चय के लिए उनका अभिनंदन।

(३) काम की कारवाई के लिए समिति की नियुक्ति। इस समिति की आगामी सभा ता० ७ जनवरी को होगी।

(४) अशोभनीय चित्रों के निर्णय के लिए सिनेमा-मालिक, *नगराध्यक्ष, नागरिक और महिला-प्रतिनिधियों* की एक समिति नियुक्त की जाय।

मेरठ

जिला सर्वोदय-मंडल मेरठ की बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से ११ दिसम्बर को पास हुआ। मेरठ में पोस्टरों के बारे में कारवाई करने के लिए स्त्री-पुरुषों की एक समिति बन गयी है।

'जिला सर्वोदय-मण्डल मेरठ सार्वजनिक स्थानों पर अशोभनीय पोस्टरों का प्रदर्शन नागरिक हितों पर कुठाराघात समझता है। साथ ही देश के नवयुवकों तथा बालकों के नैतिक पतन का

कारण मानता है। अतः यह मण्डल इस प्रकार पोस्टरों को बन्द कराने की माँग करता है। मण्डल पोस्टरों से सम्बद्ध व्यक्तियों से अनुरोध करता है कि वे इस प्रकार के पोस्टर सार्वजनिक स्थानों से तुरन्त वापस ले लें। यह मण्डल जिला-अधिकारियों का भी ध्यान इस ओर दिलाना चाहता है कि वे ऐसे पोस्टरों के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगायें। मण्डल जनता से अपील करता है कि वह अपने मकानों की दीवारों पर इन पोस्टरों को लगाने की आज्ञा न दे।"

बुलन्दशहर

जिला सर्वोदय-मंडल, बुलन्दशहर की बैठक में ता० १२ दिसम्बर को सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ

"विनोबाजी के मार्गदर्शन में अशोभनीय पोस्टरों को हटाने का कार्य बुलन्दशहर से आरम्भ करके इसका विस्तार जिले के सभी कस्बों व शहरों में किया जाय। इस काम को सुचारु रूप से चलाने के लिए नौ सदस्यों की एक समिति बनायी गयी, जिसको यह अधिकार दिया गया है कि यह समिति अन्य आवश्यक व्यक्तियों को भी शामिल करके उनका सहयोग प्राप्त करे। इस समिति के संयोजक श्री बसन्तीप्रसाद गंगल बनाये गये हैं।"

कटिहार

बिहार में कटिहार सब-डिविजनल सर्वोदय-मंडल की ओर से कटिहार नगर-निगम-भवन में शहर की महिलाओं की ११ दिसम्बर को एक सभा हुई। कटिहार सब-डिविजन के प्रमुख कार्यकर्ता श्री दामोदरजी ने कहा कि "आज विनोबाजी जो आन्दोलन चला रहे हैं, वह सिर्फ आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन तक ही सीमित नहीं, बल्कि नैतिकता का इस आन्दोलन में प्रमुख स्थान है। सिनेमा के गन्दे पोस्टर्स तथा गन्दे शब्दों से आज के युवक-

भुमतियों पर इतना बुरा प्रभाव पड़ रहा है कि उससे नैतिकता नष्ट हो रही है। इन्हीं पोस्टर्स के खिलाफ आज विनोबाजी का अभियान चल रहा है। हमें कटिहार में भी इसके लिए सन्नद्ध हो जाना है। इसके लिए मुझे यहाँ की माताओं का आशीर्वाद हासिल होगा ऐसी आशा है।"

महिलाओं ने अपने हाथ उठाकर समर्थन किया। इसके बाद तय हुआ कि कमेटी के सदस्य अत्यन्त नम्रतापूर्वक सिनेमा-मालिकों से मिलेंगे और प्रार्थना करेंगे कि इस तरह के पोस्टर्स प्रदर्शित न किये जायँ। विनोबाजी का संदेश लेकर वे घर-घर पहुँचेंगे और लोगों को समझायेंगे कि आप अपनी संतान की भलाई के लिए ही सही अपने मकानों पर इस तरह के गन्दे पोस्टर्स न लगने दें।

रायपुर

सर्वोदय-मंडल रायपुर द्वारा गठित अशोभनीय पोस्टर निर्मूलन-समिति की प्रथम बैठक १५ दिसम्बर को हुई। समिति ने सर्वसम्मति से श्रीमती सुशीला सप्रे को समिति की संयोजिका निर्वाचित किया। समिति की ओर से एक निवेदन तैयार किया गया जिसमें सिनेमा-गृहों के मुख्य व्यवस्थापकों से प्रार्थना की गयी है कि वे कृपया अशोभनीय पोस्टरों एवं विज्ञापनों को सार्वजनिक स्थानों में प्रदर्शित न करें तथा समाज के नैतिक चारित्र्य को ऊँचा उठाने में अपने कर्तव्य का पालन करें। यदि ऐसे चित्रों अथवा पोस्टरों की अशोभनीयता के सम्बन्ध में विचार एवं निर्णय में किसी प्रकार की कठिनाई अनुभव हो, तो हमारी सम्मति की सेवा सदा उन्हें सुलभ रहेगी। सिनेमा-मालिकों एवं व्यवस्थापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे गृहस्थ-धर्म की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण बनाये रखेंगे।

श्री गुमराम अली—मैनेजर 'अमर दीप टाकीज' ने अपनी

और दो साप्ताहिक—राजकमल तथा प्रभात—में भी अशोभनीय पोस्टरों को न लगाने का संकल्प किया है तथा गन्दे फिल्मों के प्रदर्शन भी जहाँ तक होगा, न नहीं करेंगे।

इलाहाबाद में सार्वजनिक सभा

“हम-आप सब अन्दर से बदल सकें तो आर्थिक सामाजिक राजनैतिक तथा नैतिक—सब तरह के परिवर्तन सहज सम्भव होंगे। हमारा कर्तव्य है कि नयी पीढ़ी को सही ढंग से बनाकर छोड़ जायें। यही मुख्य काम है। व्यवहार पहले और कानून, राजनीति अर्थशास्त्र आदि बाद में। अगर व्यवहार सुधरता है, तब सब चीजें ठीक तरह से चलेंगी। विनोबाजी के अशोभनीय पोस्टर-विरोधी आन्दोलन का यही रहस्य है।”

उपर्युक्त उद्गार मम्फोर्डगंज की एक सार्वजनिक सभा में अध्यक्ष-पद से भाषण करते हुए प्रयाग विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो० महेशचन्द्र ने प्रकट किये। उनके भाषण के बाद अशोभनीय चित्र तथा फिल्मघर अग्नि में वेद-मंत्रों के साथ जलाये गये। सभा में माताएँ भी उपस्थित थीं।

कार्यक्रम का श्रीगणेश दो मिनट की मौन साधना से हुआ। फिर रामायण-पाठ किया गया। उसके बाद श्री त्रिलोचन दुबे ने विनोबाजी के इस महत्त्वपूर्ण आन्दोलन की भूमिका समझायी और परिचय दिया। उन्होंने बताया कि इस आन्दोलन का प्रारम्भ इन्दौर से हुआ और अब यह देश की विभिन्न नगरियों में जोर पकड़ रहा है।

सुश्री कमल महरोत्रा एम० ए० ने कहा कि “अशोभनीय चित्रों पोस्टरों विज्ञापनों आदि से हम बहनों को बड़ी ग्लानि होती है। दुनिया में ऐसा कौन है, जो यह दावा कर सके कि आँखों से गन्दी चीज देखने, कान से गन्दा गाना सुनने और जीभ से तरह चीज चखने पर उसके मन पर खराब असर नहीं पड़ता? इन

अशोभनीय चित्रों-पोस्टरों आदि से चरित्र-निर्माण में बाधा पड़ती है और जिस मनुष्य का चरित्र ऊँचा नहीं, वह कर ही क्या सकता है ? चरित्र की महानता ही मुख्य चीज है। आप सब ऐसा वातावरण बना दीजिये कि सरकार मजबूर हो जाय और ये गंदी चीजें खतम हों।"

'जागरूक' संस्था के संयोजक श्री प्रकाशचन्द्र ने कहा कि "इस आन्दोलन की बड़ी आवश्यकता है। यह समय की माँग है। गन्दे पोस्टरों और चित्रों के अलावा गन्दे साहित्य के घातक प्रभाव को भी हमें नहीं भूलना है। यह सब चीजें बन्द होनी चाहिए। और फिर सिविल लाइन्स में या अन्य स्थानों पर जो चलती-फिरती तसवीरें नजर आती हैं, उनको भी सही रास्ते पर लाना नवयुवकों का उत्तरदायित्व है। हमें समाज बदलना है।"

विश्वविद्यालय की रिसर्च छात्रा, सुश्री सुचेता बहन ने कहा कि "आज अशोभनीय चित्रों पोस्टरों आदि के कारण कला के नाम पर कला का सत्यानाश हो रहा है। इस सभ्यता ने हमें कहाँ से कहाँ ला दिया है ? युनिवर्सिटी और कॉलेज में पढ़नेवाली हमारी बहनें कपड़ों पर ज्यादा-से-ज्यादा पैसा खर्च करती हैं और बदन को कम-से-कम ढाँकना चाहती हैं। संस्कृति के नाम पर विडम्बना चल रही है। अपने जीवन की सबसे बड़ी शक्ति धर्म है और धार्मिक आधार पर ही समाज का गठन होना चाहिए।"

इलाहाबाद सर्वोदय-मंडल के मंत्री श्री सुरेशराम ने कहा कि "इस आन्दोलन का मकसद है जन शक्ति जाग्रत हो और लोगों में अपने मसलों को खुद ही हल करने की हिम्मत आये।"

इसके बाद श्री विज्ञापन बुध ने बताया कि मुहल्ले के निवासियों ने अशोभनीय चित्र तथा कैलेण्डर दिये हैं, ताकि उन्हें जला दिया जाय। तब अध्यापक महोदय ने सभा से पूछा कि क्या वह

उठाने पर कार्यक्रम से सहमत हैं? सबके हाथ उठाने पर प्रो० महेशचन्द्र ने इस कार्यक्रम की अनुमति दी।

तब वेद-मंत्रों के साथ अशोभनीय चित्र तथा कैलेण्डर जलाये गये। अंत में एक गीत और मंत्र-नाम तथा जय-जयकार के साथ सभा विसर्जित की गयी।

सुबह के समय गनजेसगंज में इस सम्बन्ध में प्रभात-फेरी भी निकली थी।

लखनऊ के डिप्टी कमिश्नर से नागरिक शिष्ट-मण्डल की भेंट

ता० ५ जनवरी की सुबह लखनऊ के डिप्टी कमिश्नर श्री एस० सी० सिंघा से एक सर्वदलीय नागरिक शिष्ट-मण्डल ने विनोबाजी के अश्लील सिनेमा-पोस्टर विरोधी अभियान के समर्थन में भेंट की। शिष्ट-मण्डल में थे, श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, एम० एल० ए०, श्री त्रिलोकी सिंह, नेता विरोधी दल, विधान सभा, श्री निर्मल-चन्द्र चतुर्वेदी एम० एल० सी०, डॉ० कंचनलता सब्बरवाल, प्रिंसिपल महिला विद्यालय, श्रीमती गौरीदेवी कम्बोज, जनसंघी सदस्या लखनऊ कारपोरेशन, श्रीमती कृष्णा निगम, प्रिंसिपल, सर्वोदय बाल निकुंज प्रिंसिपल भारती गांधी प्रो० यू० ए० आसरानी लखनऊ नगरीय पोस्टर विरोधी समिति श्री दरबारीलाल अस्थाना तथा श्री जे० के० टण्डन भी उस समय उपस्थित थे।

काफी विचार-विनिमय के बाद डिप्टी कमिश्नर साहब ने सिनेमा-प्रदर्शकों को आवश्यक निर्देश देने का आश्वासन दिया। यह भी निश्चय हुआ कि डिप्टी कमिश्नर साहब शिष्ट-मण्डल तथा सिनेमा प्रदर्शकों की एक सम्मिलित बैठक बुलाकर इस सम्बन्ध में और विचार-विमर्श करेंगे तथा प्रतिष्ठित नागरिकों की एक निगरानी समिति समय-समय पर पोस्टरों का निरीक्षण करके अधि-

कारियों को यह निर्णय करने में मदद देगी कि कौनसे पोस्टर आपत्तिजनक हैं।

आगरा में सिनेमा-मालिकों ने अशोभनीय पोस्टर हटाये

आगरा शहर में लगे हुए कुछ अशोभनीय सिनेमा-पोस्टरों को हटाने के लिए सिनेमा-संचालकों से निवेदन किया गया था। अगर पोस्टर न हटे, तो ता० ५ जनवरी को सर्वोदय-कार्यकर्ता स्वयं उन्हें हटा देंगे, ऐसी सूचना भी दे दी गयी थी। पर ता० ४ को ही उस जगह से, जहाँ प्रतीकात्मक सत्याग्रह करने की कार्यकर्ताओं ने सूचना दी थी, वह पोस्टर हटा लिया गया। ता० ५ जनवरी को आगरा के सर्वोदय-कार्यालय में एक प्रेस-कान्फरेंस बुलायी गयी, जिसमें इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की गयी।

अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लगे 'मुगले आजम' और 'बरसात की रात' वाले पोस्टर को ६ जनवरी तक हटा लेने के लिए सिनेमा-मालिकों को सूचना दी गयी। अगर ये पोस्टर वहाँ से नहीं हटेंगे तो ७ जनवरी से पूरे शहर में उन्हें फाड़ा जायगा या उन पर रंग पोता जायगा, यह भी बताया गया। पता चला कि सूचना के अनुसार 'मुगले आजम' का 'बाहु-पाश' वाला पोस्टर सारे शहर में से हटा दिया गया। इस कार्य के लिए सिनेमा-संचालकों को बधाई दी गयी।

प्रेस-कान्फरन्स में पूछा गया कि सरकारी 'सेन्सर-बोर्ड' के खिलाफ सर्वोदय-मण्डल कोई कदम क्यों नहीं उठाता? इसके बारे में प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डल के मन्त्री श्री ओमप्रकाश गौड़ ने बताया कि सर्वोदय का काम जनमत तैयार करने का है। जनमत के आगे सरकार का झुकना भी दूर नहीं समझी। आन्दोलन को गति देने की दृष्टि से इस कार्य की जिम्मेदारी मुहल्ले-मुहल्ले में जनता अपने हाथ में ले ले इस प्रकार की योजना भी सर्वोदय मंडल बनाने जा रहा है।

गन्दे साहित्य की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है कि वे इसका बहिष्कार करें।

'बरसात की रात' के सिनेमा-संचालकों ने ता० ७ तक गन्दे पोस्टरों को नहीं हटाया। तब सर्वोदय-सेवा मंडल के सहयोगी कार्यकर्त्ताओं और लोकसेवकों का दल पोस्टर के स्थान, मीरा हुसैनी चौराहे पर पहुँच गया। वे जनता के सामने उस पोस्टर के अशोभनीय होने का विचार समझाने का कार्य कर ही रहे थे, इतने में सिनेमा-संचालक उस पोस्टरवाले बोर्ड को उखाड़कर ले गये। उसके बाद कार्यकर्त्ताओं का दल कलक्टरी कचहरी के सामने लगे गन्दे चित्र को उखाड़ने के लिए गया। वहाँ पर लगभग दो हजार व्यक्ति इकट्ठे हो गये थे। उनके सामने उस पोस्टर पर स्वामी कृष्णस्वरूपजी ने रंग पोत दिया और उसे फाड़ डाला। उसके बाद दल नजदीक के दूसरे चौराहे बाकरगंज पर गया। वहाँ पर जिस भाई के मकान पर गन्दे चित्र का बोर्ड लगा हुआ था, उसने उतार कर उसको उलटा दिया। आगे चलकर गन्दे चित्र वहाँ न लगाने की बात को भी उस भाई ने स्वीकार किया।

अशोभनीय पोस्टर-निर्णायक समिति ने अपनी मीटिंग में दो अन्य पोस्टरों को अशोभनीय घोषित किया। अत: २४ घंटों के अन्दर सिनेमा-संचालकों को उन्हें हटाने की सूचना दी गयी कि अगर उन्होंने अवधि के अन्दर पोस्टर नहीं हटाये, तो पूर्व-नीति के अनुसार जिलाधीश को सूचना देकर उन्हें हटाने या फाड़ने का काम कार्यकर्त्ता शुरू कर देंगे।

इस सूचना के परिणामस्वरूप खास बाजार में लगा हुआ एक पोस्टर तो सिनेमा वालों ने पहले ही उतार लिया।

इस तरह १० जनवरी को सत्याग्रह होने के पहले ही सिनेमा मालिकों ने कार्यकर्त्ताओं द्वारा अशोभनीय घोषित किये गये बड़े पोस्टर शहरों के लगभग सभी प्रमुख स्थानों पर से हटाकर उनकी

जगह छोटे पोस्टर लगा दिये हैं। इससे शहर में अच्छा वातावरण बन रहा है।

आशा है, एक माह के अन्दर आगरा शहरभर के सब अशोभनीय चित्र हट जायेंगे। श्री चिमनलालजी और उनके साथी इस कार्य में पूरी तरह जुटे हुए हैं।

कानपुर नगर-महापालिका के उपप्रमुख का आश्वासन

कानपुर-कारपोरेशन (नगर-महापालिका) के उपप्रमुख (डिप्टी मेयर) श्री शिवनारायण टण्डन ने अशोभनीय पोस्टर हटाने के आन्दोलन के संबंध में कानपुर-महापालिका के सहयोग का आश्वासन देते हुए विनोबा को लिखा है :

परमपूज्य विनोबाजी,

अशोभनीय पोस्टरों को हटाने का कार्य जो सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने आपके आदेशानुसार प्रारम्भ किया है, वह सर्वथा उचित, प्रशंसनीय और स्तुत्य है। इस कार्य के द्वारा एक ओर तो कार्यकर्ताओं का संगठन सुगठित हो सकता है और दूसरी ओर नागरिकों के बीच अशुद्ध बातों की ओर विरोध करने की जन-जागरण-शक्ति उत्पन्न हो सकती है, जिससे कि जीवन के व्यापक क्षेत्र में विशुद्ध भावना की संगठित शक्ति उदीयमान हो सकती है। मैं तो इस कार्य को स्वराज्य-आन्दोलन के नमक-सत्याग्रह की तरह बुनियादी नैतिक कार्य ही मानता हूँ।

इस संबंध में आदरणीय कल्याणभाई से बातचीत हुई है और उनके जो सुझाव दिये हैं, वे सादर और सप्रेम मुझे मान्य हैं। मैंने कानपुर के अपने सम्मानित सर्वोदय-कार्यकर्ताओं से प्रार्थना की है कि वे तत्सम्बन्धी कार्यक्रम शीघ्र बनायें और उसे कार्यरूप में परिणत करें, जिसके लिए प्रारम्भिक प्रयास प्रारम्भ हो चुके हैं। इस सत्कार्य में महापालिका का जो भी सहयोग आवश्यक होगा,

इसे महापालिका अवश्य देगी ऐसा मेरा विश्वास है। हम लोग तो आपके भक्त और सेवक हैं। आपके दिये हुए संदेश को पूरा करने में जो भी सेवा मैं स्वयं कर सकूँ, उसे सदैव अपना अहो भाग्य ही मानता हूँ। मैं अभी तक आपके दर्शन करने के लिए हाजिर न हो सका इसका मुझे खेद है। मेरा प्रयत्न होगा कि मैं शीघ्र ही आपकी सेवा में उपस्थित होकर चरण-स्पर्श करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँ।

कार्यालय उपप्रमुख	आपका सेवक
महापालिका कानपुर	शिवनारायण टण्डन
२१ ११-६१	उप-नगरप्रमुख

कलकत्ता के नागरिकों की सभा की माँग

अधिकारी-वर्ग उचित कार्यवाही करें

सर्वोदय-विचार-परिषद्, कलकत्ता की प्रेरणा से अशोभनीय पोस्टरों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए कलकत्ते के नागरिकों की एक सभा ता० ८ जनवरी को हुई जिसमें कलकत्ता-कारपोरेशन के मेयर श्री केशवचन्द्र बसु, काजी अब्दुल वदूद, श्री पी० पी० [illegible], श्री सुधीन्द्रचन्द्र साहा, श्री [illegible] गोविन्दजी आदि सज्जनों ने इस आन्दोलन के प्रति अपनी शुभेच्छा प्रकट की और कलकत्ते के नागरिकों से इस आन्दोलन में भाग लेने के लिए अपील की।

मेयर श्री केशवचन्द्र बसु ने अपने भाषण में कहा : "इस समय ये पश्चिमी ढंगों की नकल करके हमारे मातृ-भगिनियाँ चरित्र-हीन बनती हैं या नहीं, यह निश्चय ही एक गंभीर प्रश्न है। हो सकता है कि भारत में पश्चिम की चालें आज से पचास या सौ साल बाद आवें भी या न आवें। लेकिन इसके पूर्व हम अभी से उनकी तैयारी क्यों करें? हम क्यों [illegible] पर उतारें!"

उन्होंने अपील करते हुए कहा कि "इस पर ध्यान देना चाहिए और हम सबको यह प्रस्ताव करना चाहिए कि जो श्लील हों, शोभनीय हों, ऐसे ही पोस्टर छपने चाहिए।"

इस आन्दोलन को चलाने के लिए तेरह सदस्यों की एक सलाहकार समिति का गठन हुआ, जिसमें कलकत्ता-कारपोरेशन के मेयर और अन्य १२ प्रमुख नागरिक हैं।

इस सभा में एक प्रस्ताव भी पारित हुआ, जिसका मुख्य अंश यहाँ दे रहे हैं

"देखा गया है कि ऐसे चित्र जिनके साथ कला का कोई सम्बन्ध नहीं है, सिर्फ जनसाधारण की काम-वासना जाग्रत कर अर्थोपार्जन का ही एक व्यावसायिक तरीका है एवं वे ही आम रास्तों पर प्रदर्शित होते हैं। ऐसा मालूम हुआ कि केन्द्रीय सरकार पोस्टरों के निर्वाचन की मुख्य जिम्मेवारी राज्य-सरकार की बताती है। राज्य-सरकार यह बहाना देती है कि अशोभनीय पोस्टर हटाने के लिए आवश्यक शक्ति उसके पास नहीं है। कारण जो भी हो यह सभा विश्वास करती है कि जनसाधारण के लिए हानिकर तथा समाज के लिए अप्रासंग पोस्टरों को हटाने के लिए अधिकारी-वर्ग उचित कार्यवाही अवश्य करेंगे। सभा यह भी मानती है कि देश की भावी संतान पर ऐसी अनैतिकता का विष फैल जाने से कोई भी याचना अन्त में सफल नहीं हो सकती। सभा निःसन्देह यह घोषित करती है कि अशोभनीय पोस्टरों के हटाने का मकसद सिनेमा उद्योग को हानि पहुँचाना तथा विज्ञापन-अधिकार पर हस्तक्षेप करना नहीं है।

"अतः आज की यह सभा पूर्ण विश्वास करती है कि कलकत्ता के नागरिकों को यह कर्तव्य-पालन करने का अवसर ही न आये। इसके पूर्व ही सिनेमा-व्यवसायी-वर्ग तथा अधिकारी-वर्ग अशोभनीय पोस्टर हटाने पर कदम उठायेंगे।"

• • •

पोस्टरों के खिलाफ़ जनमत

विज्ञापन का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्त्व

जनवरी के प्रारम्भ में बम्बई में 'एडवर्टाइजिंग कौंसिल ऑफ इण्डिया' का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय सूचना और प्रसार-मंत्री डॉ० बी० वी० केसकर ने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि किसी देश का विज्ञापन वहाँ की सांस्कृतिक और सामाजिक मर्यादाओं के अनुरूप होना चाहिए, नहीं तो विज्ञापन की प्रभावोत्पादकता ही समाप्त हो जाती है।

साथ ही उन्होंने यह भी बतलाया कि हमारी आधुनिक विज्ञापन-प्रणाली जो पाश्चात्य ढंग पर चल रही है, उसे भारतीय भावनाओं और विचारों को व्यक्त करना चाहिए। यह जरूरी है कि यह लोगों के मानसिक प्रवृत्तियों को समझे और उन पर प्रभाव डाले।

अनैतिक (गन्दे) विज्ञापनों का ज़िक्र करते हुए डॉ० केसकर ने कहा कि ज़रूरत इस बात की है कि विज्ञापन करनेवाले लोगों के भीतर आत्मपरीक्षण द्वारा आत्मनियन्त्रण और आत्मानुशासन आये।

'एडवर्टाइजिंग कौंसिल ऑफ इण्डिया' की नींव १९५९ में पड़ी थी। इस संस्था का उद्देश्य विज्ञापन को स्वस्थ और सुसंगठित रास्तों पर ले जाना है। इस संस्था ने कुछ नैतिक नियम भी बनाये और यह अपेक्षा की गयी कि इन नियमों का पालन होगा और जो इन नियमों को तोड़ेंगे, उन्हें सहज उपायों द्वारा समझाने का भी प्रयत्न किया जायगा।

माँएँ क्या करें ?

यह तो ठीक है कि बच्चे का अखलाक सुधारने या बिगाड़ने की बड़ी जिम्मेदारी माँ पर होती है। लेकिन माँ घर से बाहर के अनैतिक वातावरण से बच्चे को कहाँ तक बचा सकती है। माँ बच्चे को किताबों, अखबारों आदि के विज्ञापनों और अन्य सामग्रियों को पढ़ने से कहाँ तक रोक सकती है ?

कराची में अमरिकी और दूसरी विदेशीय फिल्मों की जो भरमार है, उसका हाल सब जानते हैं। उन्हें देखने से माँएँ नासमझ बच्चों को पैसे न देकर या समझा-बुझाकर रोक सकती हैं। लेकिन इसका क्या उपाय वे कर सकती हैं कि अंग्रेजी सिनेमा घरों के ऊपर, अहाते की दीवारों पर और अन्य स्थानों पर जो चित्ताकर्षक पोस्टर लगे होते हैं उन्हें बच्चे न देखें ! ऐसे पोस्टरों को देखने से माँएँ बच्चों को कैसे रोक सकती हैं ! कॉलेज और स्कूल के विद्यार्थी आते-जाते और खाली घंटों में इन सिनेमाघरों के अन्दर-बाहर चक्कर लगाते देखे जा सकते हैं। वे उन अर्द्धनग्न तस्वीरों के पोस्टरों को प्यासी निगाहों से देखते और पढ़ते हैं जिनमें दर्शकों को आकर्षित करने के लिए यौन-संबंधी पात्र और अन्य आकर्षण होते हैं।

मुझे याद है कि एक अंग्रेजी फिल्म 'रेशमी मोजे' के नाम से आयी थी जिसमें एक एक्ट्रेस की टाँगें ऊपर तक नंगी थीं। एक बड़े से पोस्टर पर, बंदर रोड के एक सिनेमाघर के ऊपर, कई हफ्ते तक यह तस्वीर लगी रही। आजकल यूरोप में रातों के क्लबों के रंगीन जीवन की नग्न तस्वीरों के पोस्टरों ने आफत मचा रखी है। इस फिल्म-सम्बन्धी इतनी रंगीन चित्र, जो नंगी स्त्रियों के हैं सिनेमा के अन्दर-बाहर लगे हुए हैं। ये चित्र लड़कों को विज्ञापकर अपनी दुकान की दावत दे रहे हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा की सैकड़ों फिल्मों के विज्ञापन में लगा-

चनक, अश्लील और यौन-सम्बन्धी आकर्षण से भरपूर चित्रों को प्रदर्शित किया जाता है, जिन्हें हमारे लाड़ले और होनहार बच्चे बड़ी दिलचस्पी और शौक से देखते हैं। आश्चर्य है कि अब तक समझदार और गम्भीर लोगों ने इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया है।

कराची के ऊँचे क्लास के विदेशी अथवा अंग्रेज़ी ढंग के होटलों में जिस प्रकार निम्नकोटि के मनोरंजन और यौन-संबंधी प्यास बुझाने के साधन एकत्र किये जाते हैं, उनके बारे में विचार प्रकट करने की यहाँ आवश्यकता नहीं। किन्तु जब इनके विज्ञापन अंग्रेज़ी क्या, उर्दू पत्रों तक में दीख पड़ते हैं तो माँएँ बेचारी बेबस होकर रह जाती हैं। घर के छोटे-बड़े बच्चे-बच्चियाँ ऐसे पत्रों को बड़े शौक से पढ़ती हैं। पढ़ न पायें, तो उलट-पुलट कर अवश्य देखती हैं। और भला उछल-कूद करते हुए नंगे मर्दों और औरतों की तस्वीरें इनकी आँखों से बच भी कैसे सकती हैं! कभी तो इन विदेशी नाचने-गानेवाली पार्टियों के विज्ञापनों में करीब-करीब बिलकुल ही नंगी औरतें जिनके शरीर पर केवल नाम को ही चन्द धज्जियाँ लगी होती हैं दिखाई जाती हैं। समझदार माँएँ अश्लील पुस्तकें पढ़ने और पढ़ने से अपने को सख्ती से रोकती हैं, केवल बच्चों की खातिर। किन्तु वे समाचार-पत्रों के ऐसे विज्ञापनों को कहाँ और कैसे बच्चों की आँखों से छिपा सकती हैं?

अंग्रेज़ी और उर्दू पत्रों में बलात्कार आदि यौन-सम्बन्धी अथवा अन्य नैतिक अपराधों के समाचार मोटे और हृष्टपुष्ट शीर्षकों से सहज ही दीख पड़नेवाले स्थानों पर प्रकाशित होते हैं कि अनायास ही उन पर नज़र पड़ जाती है। सच तो यह है कि नैतिक अपराध की बातें बड़े मज़ेदार ढंग से बयान की जाती हैं, जिनको लड़के और लड़कियाँ किस्से-कहानी की भाँति दिलचस्पी और शौक से

पड़ती हैं। क्या हमारे पत्र ऐसे समाचार को गोलमोल शब्दों में बयान करके उनकी अहमियत को कम नहीं कर सकते?

यहाँ केवल दो-तीन उदाहरण दिये गये हैं। किन्तु इसी प्रकार की अन्य बहुत-सी बातें हैं, जिन पर औरों का बस नहीं चलता। आवश्यकता है कि अधिकृत और गंभीर लोग इन बातों की ओर ध्यान देकर सुधार करें, ताकि नयी सरकार के सुधारों के साथ साथ इस प्रकार की सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक बुराइयों से भी मुक्ति मिले।

—बेगम सलीमुद्दीन
मासिक 'इस्मत' कराची

नारी-समाज नेतृत्व करे

बड़े-छोटे शहरों के नागरिक आज अनेक बुराइयों के शिकार हो रहे हैं। ये बुराइयाँ घटने के बजाय दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही हैं। उनकी जड़ों को सींचने के लिए अनुकूल वातावरण भी पैदा हो रहा है। सबसे अधिक दुर्भाग्य की बात यह है कि इस सम्बन्ध में लोक-चेतना बहुत ही निष्क्रिय हो रही है।

अपने इंदौर-प्रवास में इस बार विनोबाजी का ध्यान एक ऐसी ही बुराई की ओर गया। वहाँ की गलियों और सड़कों पर घूमते हुए उन्होंने सिनेमा के भद्दे पोस्टर देखे, तो उनकी आत्मा में गहरी ग्लानि उत्पन्न हुई। उन्होंने कहा

"ये पोस्टर हटने चाहिए। यदि कानून से नहीं हट सकते, तो धर्म से हटें। अपनी वेदना को जब उन्होंने सार्वजनिक रूप से व्यक्त किया तो कुछ निहित स्वार्थों ने उसका गलत अर्थ लगाया। अपनी बात को स्पष्ट करते हुए विनोबाजी ने कहा "हमने गलत सिनेमा के खिलाफ आवाज नहीं उठायी है। इसके माने यह नहीं है कि गलत सिनेमा चलने चाहिए। उसे करना हो, तो जनमत पैदा करना चाहिए। बड़ी चीज को काम में लेने का यही मार्ग है।

सत्याग्रह में कम-से-कम चीज होती है और वह ऐसी चीज कि जिसके लिए सबकी करीब एक राय हो सकती है। सिनेमा देखने के लिए तो लोग पैसा देकर जाते हैं। अच्छा 'सेंसर' हो, यह माँग की जा सकती है। उसमें सत्याग्रह की बात नहीं आती है। लेकिन ये पोस्टर तो रास्ते में होते हैं। शहरों में नागरिकों को, बहनों को शर्मिन्दा होना पड़ता है। नीचे निगाहें करनी पड़ती हैं। आम रास्ते पर चलनेवाले नागरिकों की आँख पर हमला करने का हक क्या किसीको है? अगर किसीको ऐसे पोस्टर लगाने हों, तो अपने रंग-महलों में लगायें।"

सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के द्वारा लोकमत का आह्वान करते हुए उन्होंने आगे कहा : 'आँख पर अशोभनीय पोस्टरों का आक्रमण नहीं होना चाहिए। उसके लिए सत्याग्रह योग्य है। उसके खिलाफ मैंने विद्रोह जाहिर किया है। मैं आशा करता हूँ कि सब पोस्टर हटेंगे, तब आप चैन लेंगे।"

सिनेमा के अश्लील एवं वासनोत्तेजक पोस्टरों से समाज, विशेषकर युवकों के संस्कारों पर जो भयंकर प्रभाव पड़ रहा है, वह किसीसे छिपा नहीं है। सार्वजनिक स्थानों पर, मौके की जगह देखकर, बड़े-बड़े कामोत्तेजक पोस्टर इस प्रकार लगाये जाते हैं कि लोगों की निगाह उन पर पड़े बिना नहीं रह सकती।

आर्थिक लाभ के लिए करोड़ों नागरिकों के जीवन को कलुषित करने का यह प्रयास निस्संदेह निंदनीय है और उसके विरुद्ध शीघ्रातिशीघ्र लोकमत जाग्रत होना चाहिए। यह बुराई समूल तो तब नष्ट होगी जब गंदे सिनेमाओं पर नियंत्रण होगा लेकिन उस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक पहला कदम तो तत्काल उठाना ही चाहिए।

इन गंदे पोस्टरों को अधिक भड़कीला बनाने के लिए प्रायः स्त्रियों का कामोद्दीपक ढंग पर चित्रित किया जाता है। अपने

धीस पर यह आक्रमण नारी-समाज को किसी भी दशा में सहन नहीं करना चाहिए। अच्छा तो यह होगा कि वे ही इस आन्दोलन की मुखिया बनें और इस अनाचार को जल्द-से-जल्द दूर करावें।

—यशपाल जैन

सं 'जीवन साहित्य' मासिक दिल्ली

चरित्र निर्माण का आन्दोलन

'भूदान-यज्ञ साप्ताहिक में विनोबाजी की प्रेरणा से इन्दौर में अशोभनीय पोस्टर्स हटाने के हेतु किये गये आन्दोलन के बारे में पढ़कर प्रसन्नता हुई। क्यों न हो! बात ही ऐसी है। देश का प्रत्येक सभ्य नागरिक, जिसे अपनी संस्कृति पर नाज है, इस आन्दोलन का समर्थन करेगा। इन्दौर शहर के जिन महानुभावों तथा महिलाओं ने इस कार्य में योगदान किया है, वे भी धन्यवाद के पात्र हैं। देश की अधिकांश जनता इस आन्दोलन के प्रारंभ की प्रतीक्षा बड़ी ही उत्सुकता से कर रही थी। निश्चय ही राष्ट्र के चरित्र-निर्माण के कार्य में इस आन्दोलन की सहायता होगी।

—आचार्य हरि गोपाल

कलकत्ता

महान् नैतिक आन्दोलन

आज आचार्य विनोबा ने अपनी पूर्ण शक्ति के साथ सिनेमा के अशोभनीय और अश्लील पोस्टरों के विरुद्ध एक अभियान प्रारम्भ कर दिया है। मेरी नम्र सम्मति में यह आन्दोलन भूदान-यज्ञ से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारे आत्मिक और नैतिक पतन को रोकने में सफल हो सकेगा।

आज से कुछ वर्ष पूर्व एक इसाई बहन श्रीमती मारग्रेट ने अश्लील पोस्टरों की घातक प्रवृत्ति को देखते हुए दिल्ली में एक

आन्दोलन शुरू किया था। उन्होंने भारत-सरकार के पास भेजने के लिए एक आवेदन-पत्र तैयार किया और उस पर शहर में घूम-घूमकर हजारों बहनों के हस्ताक्षर कराये। किसी संस्था ने इस पुनीत कार्य में उन्हें सहयोग नहीं दिया, लेकिन वह अपने कार्य में लगी रहीं। बहुत कम बहनों का सहयोग उन्हें मिला।

एक दिन वे सूचना-प्रचार विभाग के केन्द्रीय मंत्री (उन दिनों श्री केसकर मंत्री नहीं थे) के पास एक शिष्टमण्डल लेकर गयीं। श्रीमती ईश्वरदेवी इस मण्डल की मुख्य प्रवक्ता थीं। शिष्टमण्डल ने माननीय मंत्री का ध्यान इधर खींचा और कहा कि जो भाई-बहन टिकट लेकर सिनेमा जाते हैं, उनके बारे में हमें कुछ नहीं कहना है, किन्तु रास्ते चलते हमारे बच्चों के सामने इन गन्दे पोस्टरों को आने से तो बचाइए। और यदि संभव हो, तो फिल्मों से भी गन्दे दृश्य हटाने में भी सरकार ध्यान दे।

माननीय मंत्री ने उन बहनों से अशोभनीयता और अश्लीलता पर सैद्धांतिक तर्क-वितर्क प्रारम्भ कर दिया और उन्हें यह सलाह दी कि वे कुछ फिल्में देखें और आक्षेप-योग्य स्थलों की उन्हें सूचना दें।

शिष्ट-मण्डल के प्रवक्ता ने कहा कि हम आप जैसे विद्वान् और वाक्-कुशल मंत्री से बहस करने नहीं आयी हैं। सम्भव है कि इस विवाद में हम निरुत्तर हो जायँ। हम तो आपसे प्रार्थना करने आयी हैं कि आप हमारी भावनाओं के वकील बनें, न कि फिल्म-उद्योग की वकालत करें।

इसके बाद भी श्रीमती भारद्वाज कुछ समय तक यह आन्दोलन करती रहीं और अन्त में वह किसी सार्वजनिक संस्था और सरकार के विद्वान् अधिकारियों से सहयोग न पाकर शान्त होकर बैठ गयीं।

अब आचार्य विनोबा जैसी प्रबल ग्राम-शक्ति का सहयोग पाकर यह आंदोलन देशव्यापी बन जाय, यही सब पत्रकों के अभिभावकों की इच्छा है।

—कृष्णाचन्द्र विद्यालंकार
संपादक 'संपदा' दिल्ली

पिछले कुछ दिनों से हमारा पड़ाव तेजी के साथ निर्लज्जता की ओर है। न केवल यह कि बड़े पैमाने पर भद्दा और गन्दे साहित्य प्रकाशित हो रहे हैं और फिल्मों में नीति-विरोधी दृश्य पेश किये जा रहे हैं, बल्कि जिसे हम भारत की पवित्र कला कहते हैं उनमें भी निर्लज्जता और अश्लीलता घुस पड़ी है। हमारे नर्तक जिनसे इस देश की सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा की आशा की जा सकती थी, आज जिस अश्लीलता का प्रदर्शन करते हैं उसका विचार तक कुछ वर्षों पहले नहीं किया जा सकता था। उस पर मजा यह है कि हमारी सरकार सोने के तमगे और सर्टीफिकेट देकर इन बातों को बढ़ावा देती है। हमारी नैतिक दशा अत्यन्त पस्त है। किन्तु उसे ऊपर उठाने अथवा उसके पतन के कारण ढूंढ़ने का कष्ट कोई नहीं करता। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि भारत में नैतिकता का यह पतन बहुत हद तक अश्लील साहित्य, फिल्म, नृत्य और ड्रामा पर आधारित है। उदाहरण के तौर पर अभी हाल में हैदराबाद में—जो अभी कुछ ही दिनों पहले तक साहित्य और कला का प्रमुख नगर था—नृत्य की एक सभा का आयोजन किया गया था जिसे देखकर बहुतेर लोगों को हार्दिक दुःख हुआ। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि सरकार इस प्रकार के सभी अश्लील तमाशों पर पाबन्दी लगाकर नैतिक पतन रोकने के बारे में गम्भीरतापूर्वक विचार करे। यह आश्चर्य की बात है कि फिल्म-सेंसर-बोर्ड ऐसे दृश्य प्रदर्शित करने की आज्ञा दे देता है, जिनसे नौजवानों के

बैठकर मैं यह लिख रहा हूँ उस स्थान के सामने ही पोस्टर लगे हैं। एक में एक नौजवान एक नवयुवती का आलिंगन में लपट खड़ा है और दूसरे में एक नवयुवक एक नवयुवती को गोद में बैठाये हुए है। ये पोस्टर दो प्रसिद्ध फिल्मों के हैं।

मैं अपने स्थान पर बैठे-बैठे देखता हूँ कि आते-जाते बालक बालिकाएँ और बड़ी उम्र की छात्र-छात्रायें इन्हें गौर से देखती हैं और नये संस्कार लेती हैं! क्या यह भी कहना पड़ेगा कि ये संस्कार देशभक्ति या नैतिकता के नहीं होते, सस्ती भावुकता के होते हैं। ये संस्कार बहुत गहराई तक पहुँच गये हैं।

कुसंस्कार की यह गहराई किस सीमा तक जा पहुँची है, इस सम्बन्ध में एक आँखोंदेखी बात बताता हूँ। एक दिन मैंने अपने कमरे की खिड़की से देखा कि दो बालक चलते-चलते रुके और सामने ही लगे सिनेमा के उस पोस्टर को उत्सुकता से देखने लगे, जिसमें एक नौजवान एक नवयुवती को आलिंगन में लपेट खड़ा है। तभी उन्होंने आपस में कुछ बातचीत की और दोनों ने ठीक उसी प्रकार आलिंगन किया, जैसे चित्र में प्रदर्शित था। आलिंगन की इस व्यस्तता में भी उनकी आँखें चित्र की ओर ही थीं, क्योंकि वही तो उनके इस कुसंस्कार की प्रेरणा का मूल स्रोत था।

इस स्थिति में यदि इन गन्दे पोस्टरों के विरुद्ध जनता में गहरा विरोध है और युग-सन्त विनोबा उस विरोध को विद्रोह का रूप देने की बात करते हैं तो क्या यह अनुचित है? अनुचित नहीं, उचित है, आवश्यक है; पर इससे भी उचित और आवश्यक प्रश्न यह है कि क्या यह प्रश्न केवल सिनेमा-पोस्टरों तक ही सीमित है।

ना सिनेमा-पोस्टरों की बात के साथ सिनेमा-सुधार का प्रश्न जुड़ा है। आश्चर्य है कि देश के नेताओं और विचारकों ने उस नुकसान की तरफ वास्तविक ध्यान नहीं दिया जो सिनेमा से हो

रहा है। संक्षेप में कहना हो, तो मैं कहूँगा कि सिनेमा ने पिछले २४ वर्षों में देश को नैतिक रूप से अस्त-व्यस्त कर दिया है।

मुझे मालूम हुआ कि मेरा आरोप भयंकर है, पर मैं गहरे अध्ययन अवलोकन और चिन्तन के बाद ही देश के सिनेमा व्यवसाय पर यह आरोप लगा रहा हूँ। इस आरोप की सिद्धि में बहुत कुछ कहा जा सकता है, पर मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ कि फौजदारी कानून के अनुसार यदि कोई मनुष्य किसी कुमारी का कौमार्य भंग करे, तो वह कई साल की सजा का हकदार माना जाता है, पर सिनेमा ने देश की नयी कन्या-पीढ़ी का मानसिक कौमार्य भंग कर दिया है, क्या इसमें किसीको सन्देह है?

आज की ६-७ वर्ष की लड़की इतनी अधिक यौन जानकारी रखती है, जितनी पहले १६-१७ वर्ष की लड़की नहीं रखती थी। फिर यह जानकारी केवल जानकारी ही तो नहीं होती। विज्ञान का सिद्धांत है कि जब हम चुम्बन का विचार करते हैं तो वह विचार कोरा विचार ही नहीं होता उसका एक दृश्य हमारे हृदय पर कल्पना की कलम से खिंच जाता है। फिर सिनेमा में तो यौन-सम्बन्धों के विचार और चित्र साफ-साफ और अत्यन्त भड़कीले रूप में दिखाये जाते हैं। इस स्थिति में यदि आज देश में ६-७ वर्ष की लड़की अपने अल्प जीवन में पूर्ण नारी बन जाती है, तो क्या यह कोई अनहोनी घटना है? यही हाल लड़कों का भी है।

फिर बात यहीं तक तो नहीं है, इससे बहुत आगे तक है। एक ही उदाहरण से बात स्पष्ट हो जायगी। प्रख्यात फिल्म 'मुगले आज़म' का एक सीन है—'प्यार किया तो डरना क्या?' यह आजकल देश की गली-गली में गूँज रहा है। इसके लगभग, फिल्म

निर्माता और रिकार्ड बजानेवालों ने कभी सोचा है कि यह गीत क्या करेगा, क्या कर रहा है?

इस प्रकार प्रश्न सिनेमा के पोस्टरों का ही नहीं है, सिनेमा के गीतों का है और पूरे सिनेमा का भी है, जिसने नयी पीढ़ी को नैतिक रूप में गिरा दिया है।

सिनेमा की कहानी का 'सेंसर' होता है, पर वर्तमान कानून इतना निकम्मा है कि उस कहानी पर बने फिल्म की काट छाँट नहीं हो सकती। सरकार इस कानून को बदले, यह आवश्यक है, पर सरकार का तरीका प्रधान मंत्री के शब्दों में 'जड़' होता है, इसलिए आवश्यक है कि लोकमत जागे, हम हों और ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करें कि फिल्म-निर्माता फिल्म-व्यवसाय को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखने-चलाने को मजबूर हों।

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
सं० 'नया-जीवन' 'विकास' सहारनपुर

अभिनव सत्याग्रह

आचार्य विनोबा और उनके साथी इस प्रयत्न में हैं कि इन्दौर 'सर्वोदय-नगर' बने। इसके लिए नगर-सफाई, सर्वोदय-पात्र शांति-सैनिक इत्यादि उपक्रम यहाँ जोरों से शुरू हो गए हैं। परन्तु इसके साथ-साथ इस महान कार्य के लिए लोक-मानस में नैतिक क्रांति की भी अत्यन्त आवश्यकता है। इस हेतु से इन्दौर में गत २ नवम्बर को एक अशोभनीय चित्र के अग्नि-संस्कार द्वारा अभिनव सत्याग्रह का प्रारंभ हुआ है।

हम देखते हैं कि चल-चित्रों के विज्ञापनों में स्त्रियों के बड़े बड़े अर्धनग्न और कामोद्दीपक चित्र गाँवों और शहरों में लगाए जाते हैं। यह नैतिक क्रान्ति की परिसमाप्ति नहीं केवल प्रारंभ है। जनता में अनीति के प्रति जो असहिष्णुता होनी चाहिए, वह

आजकल प्राय समाप्त हो रही है। उसे पुन जाग्रत करके न्याय की और संस्कृति की मर्यादा तथा मांगल्य की अभिरुचि समाज में निर्माण करने के पवित्र यज्ञ का यह कपट श्रीगणेश है। एक बार जनता में यह शुभ, सौन्दर्य और मांगल्य की सुरुचि उत्पन्न हो तो चलचित्रों के समान साहित्य अर्थात् कहानियों कविताओं और उपन्यासों में भी यह अश्लीलता को बरदाश्त नहीं करेगी। समाज में सर्वांगीण शुचिता की स्थापना का या उसके पुनर्जीवन का यह शुभारंभ है। अतः इस शुभ यज्ञ का सत्याग्रही प्रयोग इन्दौर की भाँति दूसरे शहरों में भी अवश्य होना चाहिए।

परन्तु हमें यह देखकर आश्चर्य होता है कि इस पक्षातीत और वादातीत सत्याग्रह की आलोचना करनेवाले भी पड़े ही हैं। वे कहते हैं कि अश्लीलता वस्तु में नहीं मन में होती है। परन्तु हम उनसे पूछना चाहते हैं कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं या नहीं कि जिनका उच्चारण वे अपनी माताओं बहनों और बेटियों के सामने नहीं करना चाहेंगे?

इसलिए अश्लीलता के शास्त्रार्थ में पड़ने की बजाय सरकार से हमारी यही सलाह है कि वह कोई ऐसा कानून बना दे कि चलचित्रों के विज्ञापनों में चित्र हों ही नहीं। केवल शब्दों में ही चलचित्र विज्ञापित किए जावें।

इससे धीटता और अश्लीलता का झगड़ा ही समाप्त हो जायगा।

इंदौर के मित्रों का यह प्रयत्न एकदम नया भी नहीं है। पहले भी ऐसे प्रयत्न हुए हैं। केन्द्रीय सरकार तक बात पहुँची है। परन्तु शासन का यन्त्र बहुत भारी-भरकम होता है उसे गति पकड़ने में जरा देर ही लगती है। इसलिए स्वयं समाज को ही जागृत और समर्थ बन जाना चाहिए। इंदौर की तरह यदि दूसरे शहरों और कस्बों के लोग भी जाग्रत और सुसंगठित होकर सक्रिय प्रयत्न हुए

कर देंगे तो संस्कृति और शील पर आक्रमण करनेवाले ये चित्र-विचित्र दीवारों पर से हट जायेंगे और उनके स्थान पर संतों के सुन्दर वचन हमें जहाँ-तहाँ दिखायी देने लगेंगे। अच्छा हो कि बहनें इस काम को अपने हाथ में ले लें।

गांधीजी ने जब सत्याग्रह का शंख फूँका, तो उसे सुनकर हजारों-लाखों बहनें दौड़ पड़ीं और गैरकानूनी नमक बनाने लग गयीं। उसमें उन्होंने लाठियाँ खायीं और जेलों में भी गयीं। अब फिर ऐसा ही प्रसंग है। बहनें संस्कृति की प्रत्यक्ष मूर्ति हैं। इस सत्य को वे अब अपनी कृति से सिद्ध करके दिखा दें।

—दा० म० शिखरे
में [illegible]

अश्लील पोस्टर

आचार्य विनोबा भावे ने जयपुर की एक सार्वजनिक सभा में अश्लील पोस्टरों की तीव्र निन्दा की और जनता से उनके विरुद्ध अभियान करने की अपील की। वास्तव में देश में सिनेमा का जिस तीव्र गति से फैलाव हो रहा है, उसी गति से समाज का नैतिक ह्रास भी हो रहा है। इस ओर देश के अधिकांश नेताओं का ध्यान गया है जो यह विश्वास करते हैं कि सदाचार के आधार पर ही एक दृढ़ सम्पन्न और सुखी राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। अश्लील एवं कामोत्तेजक सिने-चित्रों एवं पोस्टरों से समाज पर और विशेषकर युवकों का जो चारित्रिक पतन हो रहा है वह आज सबकी चिन्ता का विषय बन गया है। ऐसी स्थिति में आचार्य विनोबा भावे का रुष्ट होना और यह कहना स्वाभाविक ही है कि यदि सरकार इन पोस्टरों के प्रदर्शन पर रोक नहीं लगाती तो जनता को स्वयं इनके विरुद्ध अभियान आरम्भ कर देना चाहिए। उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि जो लोग ऐसे पोस्टरों को [illegible] समझते हैं वे अपने घरों में इस कला का प्रदर्शन

करें। कोई भी उत्तरदायी भारतीय आचार्य भावे के विचारों से असहमत नहीं होगा। कला के नाम पर कामोत्तेजक चित्रों का प्रदर्शन सर्वथा निन्दनीय है। जो भी हो, इसके प्रतिकार के लिए जनता और सरकार दोनों का सहयोग राष्ट्र के लिए श्रेयस्कर होगा।

१५-११ ६ —अक्षयकुमार जैन
नवभारत टाइम्स

अनैतिकता की गहरी जड़ें औषधि-प्रचार के क्षेत्र में भी

विनोबाजी की प्रेरणा से सिनेमा-जगत् में व्याप्त अश्लीलता के विरुद्ध देशव्यापी जनमत जाग्रत हो गया है। मैं तो कहूँगा कि सिनेमा में व्याप्त अश्लीलता आज के समाज में फैली हुई अश्लीलता का एक अंगमात्र है।

दूसरे व्यापारों में भी इस कुत्सित मनोभावना को बड़ी चालाकी से प्रोत्साहन दिया जा रहा है। कुछ समय पूर्व मेरे देखने में एक सचित्र विज्ञापन आया था। उसमें एक पुरुष और उससे सटी हुई स्त्री घोषणा करती दिखायी देती है कि वैद्यनाथ रस-रसायन सेवन करें और पूरे वर्ष तक बल-वीर्य से परिपूर्ण रहें। ऐसा ही कुछ रंग-ढंग डी० ए० बी० स्पायरल्टोज द्वारा प्रकाशित विज्ञापन में देखा जा सकता है। इसी तरह के और भी बहुत से विज्ञापन होंगे। मेरी सम्मति में अच्छे उद्देश्य के प्रचार के लिए साधन भी अच्छे अपनाये जायँ। परन्तु इनसे तो काम निम्न स्तर की मनोभावना ही उभारी जाती दिखायी देती है।

मैंने इस अश्लीलता के प्रति ध्यान आकृष्ट करने के लिए कुछ पत्र देश के कुछ समाचार-पत्रों को लिखे थे परन्तु एक भी सम्पादक मेरी सहायता न कर सका अथवा अपने कर्त्तव्य को पहचानने से दूर रहा। ऐसा लगता है कि सभी पत्र, जिनसे उस समय मेरा

पाला पड़ा ऐसी संस्थाओं के विज्ञापन पाने के लालची हैं, क्
इन भाइयों में इतना नैतिक साहस नहीं हुआ कि विज्ञापनों
मूल्य पर मेरा पत्र प्रकाशित करते।

अब जब यह सुना गया है कि इस अश्लीलता की रोक
लिए कुछ आदेश प्रसारित किये जाने की बात चल रही है,
मेरा उद्देश्य केवल इतना है कि आप औषधियों के इन विज्ञापन
का भी कृपया ध्यान रखें।

—शिवचरण दीक्षि
भूतपूर्व सं 'प्रभात' दक्षि

एक छात्र का दर्द !

मैं हाइस्कूल का एक विद्यार्थी हूँ, पापी नहीं हूँ। ईश्वर की कृ
से किसी बात की कमी नहीं है। हम चार-पाँच भाई हैं। मैं सबसे
छोटा हूँ इसलिए उन सबका मुझ पर प्यार है, बड़ी-बड़ी आशा
लगी हुई हैं। परन्तु उन सब आशाओं पर एक दिन तुषारापा
हो आनेवाला है क्योंकि मैं सिनेमा का अत्यधिक शौकीन हूँ,
जब मेरे पास पैसा नहीं होता, तो भाइयों से किसी बहाने से पैस
लेकर सिनेमा देखने जाता हूँ। वे सब सोचते होंगे कि पढ़ाई मे
खर्च होता है।

सिनेमा विज्ञान की देन है परन्तु इसके निर्माता निर्देशक
आदि लोग इसका दुरुपयोग करते हैं। आज हमारे शरीर और
मन का घोर पतन हो चुका है। हम मामी को मामी और बहन
को बहन कहने लायक नहीं रह हैं। जब हम सिनेमा देखक
बाहर निकलते हैं तो अपने पास से गुजरती माताओं व बहनों के
प्रति मन में क्या-क्या भाव उठते हैं तथा उनका स्पर्श कर गा
जानेवाले गाने का क्या आशय हो सकता है, यह मैं ही जानता
हूँ युवक और युवतियाँ सिनेमा देखती हैं और अभिनेता

अभिनेत्रियों की फैशन को अपनाती हैं। वे उनको ही अपना पथ प्रदर्शक मानते हैं।

आज किसी भी शहर में दीवारों पर अशोभनीय पोस्टर लगे दिखायी देते हैं, जिनमें अभिनेत्रियों के आलिंगन अंग-संचालन प्रेमभाव आदि के दृश्य दिखाये जाते हैं। पोस्टरों को छोड़ दीजिये। आज के लेखकगण भी कामोत्तेजक पुस्तकें लिखने लगे हैं। अखबारों में भी गन्दे विज्ञापन दिये जाते हैं जिनमें स्त्रियों के अशोभनीय फोटो छापे जाते हैं। दवाइयों की शीशियों कैलेण्डरों, अखबारों पर कोई भी वस्तु ऐसी बाकी नहीं रही जिस पर स्त्रियों के फोटो न हों। यह स्त्री-जाति का घोर अपमान हो रहा है। दीवारों पर लगे पोस्टरों के पास से जब हम गुजरते हैं तो उन पोस्टरों की तरफ दिलचस्पी से मुँह फाड़े देखते रहते हैं। कला के नाम पर यह अत्याचार हो रहा है। आज हमारा तरुण-समाज इसके कारण अपने जीवन से निराश होता जा रहा है। इस गम्भीर स्थिति में हमारी सरकार का कर्तव्य है कि वह इन गन्दे पोस्टरों, विज्ञापनों और कामोत्तेजक पुस्तकों पर प्रतिबन्ध लगा दे तो श्रेयस्कर होगा।

अभी हाल में श्री सन्त विनोबाजी ने अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ सत्याग्रह की चर्चा की है। उसके प्रति सिनेमा-मालिकों ने जो टीका-टिप्पणियाँ की हैं, वे लज्जाजनक हैं। इस पोस्टर अभियान में यदि बाबा कामयाब हो गये तो हम यह समझेंगे कि हमारे राष्ट्र के भाग्य का उदय हो रहा है।

—रामचन्द्रसिंह कुशवाह
कक्षा ९ पावरी भिण्ड

नैतिकता की पुकार

शहरों में सिनेमा-भवनों के आगे जो पोस्टर प्रदर्शित किये जाते हैं, उनमें सुरुचि का प्रायः अभाव ही रहता है। प्रायः ऐसे

दृश्यों को उनमें चित्रित किया जाता है, जिनमें अल्पवयस्क लड़के-लड़कियों के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लाखों लोगों की शिकायत है कि काम-वासना को उत्तेजित करनेवाले पोस्टरों की भरमार है। कला के नाम पर कुप्रवृत्तियों को उभारने का यह प्रयत्न नितान्त निन्दनीय है। लोग यह अनुभव तो करते हैं कि ऐसे पोस्टरों का बुरा प्रभाव होता है और इससे अनैतिकता को प्रश्रय मिलता है, किन्तु वे संगठित रूप से सक्रिय तथा सबल विरोध नहीं करते। इधर पिछले कुछ दिनों से आचार्य विनोबा भावे ने कुरुचिपूर्ण पोस्टरों के प्रदर्शन के विरुद्ध बारबार आवाज उठायी है। अब उनके कतिपय साथियों ने इन्दौर में एक फिल्म वितरक को अन्तिम चेतावनी दे दी है कि निर्धारित तारीख तक इस प्रकार के पोस्टर बन्द कर दिये जायँ, नहीं तो सत्याग्रह किया जायगा। यह खेद तथा आश्चर्य की बात है कि इन्दौर की जनता अपनी आवाज को इतनी बुलन्द नहीं कर सकी कि कोई उसकी उपेक्षा करने का साहस न कर सके। हम समझते हैं कि सिनेमा-व्यवसाय से सम्बद्ध व्यक्ति भी यह अनुभव करेंगे कि उन्हें जनता का इस ढंग से मनोरंजन करना है कि अच्छे विचारों का भी प्रसार हो। बाह्य स्वच्छन्दता के साथ आन्तरिक स्वच्छता तथा शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य भी जरूरी है। नैतिकता की इस पुकार पर सबको ध्यान देना है।

७-११-६ —हिंदुस्तान दैनिक

सर्वोदय-मण्डल के नेता आचार्य विनोबा ने इन्दौर को एक शुद्ध नगर बनाने का प्रयोग करने का आदेश दिया है। इसलिए सर्वोदय-मण्डल के सेवकों ने सिनेमाओं के गन्दे विज्ञापन-चित्रों के विरुद्ध सत्याग्रह शुरू कर दिया है। किसी फिल्म के एक विज्ञापन में नायक और नायिका को आलिंगन की स्थिति में

बनाया गया है। सेवकों ने इस विज्ञापन को हटाकर उसे जला दिया। (इस पत्र के संपादकजी को शायद यह पता नहीं कि इस प्रश्न पर विचार करने के लिए पूज्य विनोबा ने एक समिति नियुक्त की थी। उसमें कुछ सिनेमा-मालिक भी थे। उसने इस चित्र को सर्वानुमति से अशोभनीय करार दिया। सिनेमा के चित्र के मालिक ने भी पहले इसे हटाना स्वीकार कर लिया था, किन्तु बाद को वे बदल गये। तब उन्हें चित्र हटाने की बाकायदा विनती की गयी, समय भी दिया। शासनाधिकारियों से भी विनती की। फिर भी निश्चित तारीख तक चित्र नहीं हटाया गया। तब समय की सूचना देकर उसे हटाकर जलाया गया।—सं०) इस पर सिनेमा के मालिकों ने यह एतराज किया है कि यह कार्य नागरिक स्वतंत्रता पर आक्रमण है और कानून के भी विरुद्ध है। लेकिन यदि इन सज्जनों से पूछा जाय कि क्या कानून उन्हें यह इजाजत देता है कि वे जनता का चरित्र बिगाड़ने का आयोजन करते रहें? असल में यह कर्तव्य तो सरकार का है—जिसके पालन में वह नाकामयाब रही है—कि गन्दे चित्रों का प्रदर्शन यह न होने दे और यदि कोई ऐसे चित्रों का प्रदर्शित करे, तो उन्हें दण्डनीय करार दे।

गन्दे साहित्य को यह जब्त करार दे सकती है तो गन्दे चित्रों को क्यों नहीं? सर्वोदय के सेवकों ने इन गन्दे चित्रों के विरुद्ध जो मोर्चा लगाया है, उससे हम आशा करें कि भारत सरकार की आँखें खुलेंगी और वह इनके खिलाफ उचित कारगर कदम उठायेगी। क्या तब भी सिनेमावाले कहेंगे कि सरकार जनता की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर अनुचित आक्रमण कर रही है? जो कार्य आत्म-घाती पुरुषों के चरित्र का नाश करनेवाला है, स्वास्थ्य-संरक्षण सत्ता का कुफल है। सिनेमावाले अपने मतलब के लिए कौम का चरित्र बिगाड़ना चाहें तो उन्हें इसकी इजाजत नहीं दी जा सकती। सर्वोदय के सेवकों को तो यह काम इसलिए हाथ में लेना पड़ा कि

सरकार अपना फर्ज अदा नहीं कर रही है। सर्वोदय के सेवकों ने यह काम जो हाथ में लिया है उसके लिए व सारी जनता के धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है, अब सरकार भी कुछ कदम उठायेगी।"

—उर्दू दैनिक 'प्रताप'
८-११-'५

निर्लज्ज प्रदर्शन

स्वतंत्रता की प्राप्ति और महात्मा गांधीजी की मृत्यु के बाद इन्दौर के इस सत्याग्रह ने भारत के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू कर दिया है। स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद देश में आर्थिक मांगों, राजनैतिक प्रश्नों भाषा के विवादों, भौगोलिक और प्रादेशिक अधिकारों आदि को लेकर सत्याग्रह के नाम पर अनेक हड़तालें लड़ाइयों और हिंसक प्रकार भी हुए। परन्तु गांधीजी के तत्त्वों पर आधारित और विशुद्ध नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित यह सत्याग्रह पहला है।

सिनेमा देखना चाहिए या नहीं शिक्षा की दृष्टि से उनका महत्त्व कितना है इनमें से सपरिवार देखने लायक खेल कौन-से हैं केवल प्रौढ़ों के देखने लायक कौन-से हैं ये सारी बातें ऐसी हैं जिन पर विचार किया जा सकता है और मतभेद भी हो सकता है। परन्तु आलिंगन चुम्बन आदि जो बातें साधारणतया सभ्य समाज में नहीं की जातीं व विज्ञापनों के चित्रों में बतायी जायं ऐसा कोई भी पसन्द नहीं करेगा। स्वयं सिनेमा के मालिक भी ऐसा विज्ञापन आम रास्तों पर करने की हिम्मत न करेंगे। तब ऐसे चित्र जन-समाज के सामने सड़कों पर लगाने की बेशर्मी ये लोग क्या करते हैं? केवल बच्चों के दिलों पर ही इनका दुष्परिणाम नहीं होता। जैसा कि पू० विनोबा ने कहा है—किसी

भी मुसंस्कृत मनुष्य की आँखों पर वे हमले के समान ही हैं—इसमें कोई सन्देह नहीं।

स्त्रियों के रूप और देह का यह निर्लज्ज प्रदर्शन बन्द हो, इस हेतु से किया गया इन्दौर का यह सत्याग्रह सचमुच आदर-णीय है और इसे सारे समाज को पूरा समर्थन मिलेगा, ऐसी हमें आशा है। हमें निश्चय है कि इस सत्याग्रह में भारत की असंख्य सुसंस्कारी और मर्यादाशील माताओं तथा बहनों की आंतरिक और हृदयस्थ भावना प्रकट हो रही है।

परन्तु यह बुराई केवल सिनेमा के विज्ञापन-चित्रों तक ही सीमित नहीं है। ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति के महान् साधन समझे जानेवाले साहित्य के क्षेत्र में भी इसका गहरा प्रवेश हो गया है। अखबारों पत्र-पत्रिकाओं में छपे विज्ञापनों और 'कलाकृति'–रूप माने जानेवाले चित्रों और कहानियों में भी यह विकार-पोषक सामग्री इन दिनों बहुत बड़े प्रमाण में छप रही है, जिसका परिणाम अपरिपक्व बुद्धिवाले युवकों पर बहुत बुरा हो रहा है। हम सब जानते हैं और प्रतिदिन देखते हैं कि इन विकारग्रस्त युवकों और लड़कों की अपराध्य हरकतों के कारण लड़कियों और स्त्रियों के लिए दिन में अकेले घूमना खतरे से खाली नहीं रह गया है। यह हमारे देश और समाज के लिए अत्यन्त लज्जाजनक है। हम आशा करते हैं कि समाज जाग्रत होकर इस बुराई से अवश्य ही और समय पर अपनी रक्षा करेगा।

— स्वतन्त्र भारत

एक महिला की पुकार

इंग्लैण्ड से प्रकाशित होनेवाले 'पायस युनिवर्सल' पत्रिका में एक अमेरिकन महिला की ओर से अपील छपी है।

इस अमेरिकन महिला की पुकार समस्त स्त्री जाति की पुकार है। हमारी आँखें खुलनी चाहिए कि हम आये दिन अखबारों में सिनेमा-घरों में विज्ञापनों आदि में स्त्रियों के हाव-भाव का प्रदर्शन करके मातृ-जाति का कितना अपमान कर रहे हैं।

From a Woman to Man

I am woman I am your wife, your sweet heart, your mother, your sister, your friend. I need your help

I was created to give to the world gentleness, understanding, serenity, beauty and love I am finding it increasing by difficult to fulfil my purpose Many people in advertising motion pictures and television have ignored my inner qualities and have repeatedly used me ONLY as a symbol of sex.

This humiliates me; it destroys my dignity, it prevents me from being what YOU want me to be—an example of beauty, inspiration and love Love for my children Love for my husband Love of My God.

I need your help to restore me my true

position—to allow me to fulfil the PURPOSE FOR WHICH I WAS CREATED

हिन्दी सार

मैं स्त्री हूँ, मैं आपकी पत्नी हूँ, आपकी प्रियतमा हूँ, आपकी माता हूँ, आपकी बहन हूँ, आपकी मित्र हूँ। मुझे आपकी मदद की जरूरत है।

मेरी रचना इसलिए की गयी थी कि मैं संसार को सौम्यता विवेक, पवित्रता सौन्दर्य और प्रेम दे सकूँ। लेकिन मैं देखती हूँ कि इस उद्देश्य की पूर्ति करना मेरे लिए उत्तरोत्तर कठिन होता जा रहा है। सिनेमा और टेलीविजनवाले विज्ञापन-कर्ता मेरी अन्य विशेषताएँ और गुणों को भुलाकर मेरा उपयोग केवल एक ही काम के लिए कर रहे हैं और वह है—कामोत्तेजन।

इसके कारण मैं अपमानित होती हूँ, इससे मेरी प्रतिष्ठा पर पानी फिर जाता है, इसके कारण मैं वह नहीं बन पाती हूँ, जो आप चाहते हैं कि मैं बनूँ—सौन्दर्य, प्रेरणा और प्रेम का स्रोत। प्रेम की मूर्ति—अपने बच्चों के लिए, अपने पति के लिए, परमेश्वर के लिए।

मैं फिर से अपना सच्चा पद प्राप्त करने में आपकी मदद चाहती हूँ ताकि जिस उद्देश्य के लिए मेरा सर्जन हुआ है, उसे मैं पूरा कर सकूँ। ● ● ●

परिशिष्ट १६

अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ सत्याग्रह

[हमारे प्रतिनिधि द्वारा]

इन्दौर में ५ नवम्बर को प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में रेलवे-स्टेशन पर लगे फिल्म 'कच्चे धागे' का अशोभनीय पोस्टर मध्यप्रदेश सर्वोदय-

मंडल के अध्यक्ष श्री दादाभाई नाइक के नेतृत्व में सत्याग्रही टोली द्वारा शांत वातावरण में जला दिया गया।

नवनिर्मित सर्वोदय-शानप्रन्य-मंडल की इस काम के लिए नियुक्त उपसमिति ने इस 'पोस्टर' को सर्वसम्मति से अशोभनीय करार दिया था। किन्तु वह इस पोस्टर को वैधानिक उपायों द्वारा हटवाने में असमर्थ रही। मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल ने भी सम्बद्ध पोस्टर मालिक तथा शासकीय अधिकारियों से हटाने के लिए हर संभव प्रयत्न किया किन्तु अपेक्षित परिणाम नहीं निकले। ता० २९ नवम्बर को मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल के मंत्री श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त विनोबाजी से इस सम्बन्ध में मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए छिंदवाड़ा गये। विनोबाजी ने सलाह देते हुए छिंदवाड़ा की प्रार्थना-सभा में कहा

"एक सप्ताह की नोटिस दी जाय। अगर पोस्टर नहीं हटता है तो सत्याग्रह करते हुए पोस्टर को जला दिया जाय।" विनोबाजी ने आगे स्पष्ट शब्दों में कहा "इस नैतिक प्रश्न पर किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता है। इसलिए सत्याग्रह ही एक मार्ग रह जाता है।"

मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल द्वारा पोस्टर मालिक के नाम एक लिखित निवेदन में एक सप्ताह का समय देते हुए ता० ४ नवम्बर की शाम तक पोस्टर हटा लेने के लिए प्रार्थना की कि अगर ऐसा नहीं करेंगे तो सत्याग्रह करना होगा। इस बीच में इस प्रश्न को लेकर इन्दौर के विभिन्न मुहल्लों में सभाएँ की गयीं और जनमत जाग्रत किया गया। स्मरण रहे कि जब विनोबाजी सवा महीने तक इन्दौर रहे थे उस वक्त वे अशोभनीय पोस्टर देखकर बहुत दुःखी हुए थे। उन्होंने जनता को कहा था कि वे अपनी दीवारों पर सिनेमा के भद्दे और अशोभनीय पोस्टर हटा दें और उसकी जगह

संघों के मचन लिखे जायें। उनका नारा था 'स्वच्छ दीवार हों स्वच्छ विचार हों।'

इतना ही नहीं, सन २८ सितम्बर को करीब एक महीने बाद विनोबाजी इंदौर आये तब उनसे सिनेमा-मालिक और फिल्म-वितरक मिलने आये और बाबा के सामने अपनी कठिनाइयाँ रखते हुए कहा कि फिल्म-वितरक ऊपर से 'पोस्टर' तैयार करके भेजते हैं। फिल्म को 'सेन्सर' करने का काम भी ऊपर से ही होता है। अकेले इन्दौरवालों के अभिक्रम से क्या होगा?

विनोबा ने स्पष्ट शब्दों में जवाब दिया "ऊपर से 'सेन्सर' के सम्बन्ध में ऊपरवालों से बात कर लूँगा। यहाँ जो बातें हुईं, वे दिल्लीवालों के पास पहुँच गयी हैं। लेकिन यह कैसी अजीब बात है कि सब कुछ ऊपर से हो! मैं आपको 'गधा' नहीं बनाना चाहता हूँ। गधों को ऊपर से हाँका जाता है, वो वे इनकार नहीं कर सकते हैं। लेकिन आप तो इन्सान हैं। मैं इस संबंध में प्राइम मिनिस्टर से लेकर आप सबको नोटिस देना चाहता हूँ।"

इस प्रश्न पर आगे इन्होंने अत्यन्त स्पष्टता और दृढ़ता से चुनौती देते हुए कहा

"इस बारे में मेरे विचार स्पष्ट हैं। इस कार्य में यदि मैं शासन या आप लोगों की तरफ से ढील-पोल देखूँगा तो इस पर अखिल भारत सत्याग्रह भी शुरू हो सकता है। जो भी परिणाम हो मैं मुक्त रहने के बजाय जेल में रहना पसन्द करूँगा। इस साल तक गलत सत्याग्रहों को रोकने की कोशिश की है। मगर यह सत्याग्रह मैं खुद चलाऊँगा। सत्याग्रह की मेरी मानसिक तैयारी हो चुकी है।"

इस सत्याग्रह के सम्बन्ध में कोई गलतफहमी न हो, इसलिए मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल के मंत्री ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट करते हुए कहा

"विनोबाजी के मार्गदर्शन में इन्दौर नगर में जो सत्याग्रह अशोमनीय सिनेमा-विज्ञापन के खिलाफ किया जा रहा है, उस संबंध में कोई गलतफहमी पैदा न हो, इसके लिए यह निवेदन है कि यह आन्दोलन न तो सिनेमा-उद्योग के विरोध में है और न ही किसी विज्ञापन-अधिकार के खिलाफ है। यह किसी संस्था द्वारा अपने नैतिक मूल्यों को विज्ञापन-दाताओं पर लादने का कदम भी नहीं है। सीधी बात, जिसके लिए प्रयत्न किया जा रहा है वह यह है कि आम सड़कों और रास्तों पर होनेवाले विज्ञापनों में सुरुचि, शिष्टता, शील एवं शोमनीयता का एक पैमाना बरता जाय। नैतिक, अनैतिक प्रभाव डालनेवाला किसे कहें, यह भी सवाल यहाँ नहीं है। प्रश्न केवल यही है कि आम रास्तों पर होनेवाला दृश्य-चित्र और विज्ञापन आबाल-वृद्ध नागरिकों की आँखों पर अनमाँगा लादा जाता है, उसके बारे में क्या नागरिक का यह माँग करना कि उसमें कुछ मर्यादाएँ बरती जानी चाहिए—गलत है?"

●

महिला-सम्मेलन का प्रस्ताव

अभी हाल में सूरत में हुए अखिल भारत महिला सम्मेलन में एक प्रस्ताव में भद्दे पोस्टर्स और विज्ञापनों में महिला जाति को विकृत रूप में चित्रित करने की निन्दा की गयी और कहा गया है कि इससे देश का नैतिक धरातल गिरता है।